प्रकाशन दिनांक
प्रत्येक महीने की
११ तारीख पूर्ण
अंक २२५
अंक अप्रैल-२०२६

मासिक

श्री स्वामिनारायण

Shree Swaminarayan (Gujarati Monthly)



प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-















संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र



वर्ष - १९ ● अंक : २२५ ● अप्रैल-२०२६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	''अवसर'' अहेवाल	०६
०४.	श्रीहरि के तीनो स्वरुपो के मुख से आशीर्वचन	३०
०५.	भक्ति सुधा	४०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से	४१

અસ્મદીયમ્

श्रीजी महाराजने आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज को वचन दिये है कि हम स्थायी रुप से रात-दिन आप के साथ रहूँगा। यह वचन अपने बड़े-बड़े महोत्सवो, पर्व, उत्सव, समैयो पर प्रत्यक्षता का अनुभव करता है। श्री नरनारायणदेव देश में उत्सवो की परम्परा लगातार होती है। एक के बाद एक उत्सव दिव्यता पूर्वक मनाया जाता है। जिसमें धर्मकुल, संत और हरिभक्तो की एकता का दर्शन होता है। जेतलपुरधाम श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का २०० वर्ष के भगवत प्राप्ति का अवसर अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के विशेष नेतृत्व-अध्यक्षता में लाखो देश-विदेश के संत मिले। आने वाले २०२७ में जनवरी ६ से १० के मध्य धोलका श्री मुरली मनोहरदेव हरिकृष्ण महाराज का २०० वर्ष का "त्योहार" की तीव्र तैयारी चल रही है।

हम सभी को अति गौरव आनंद है कि अपने भावि आचार्य महाराजश्री पूरे सत्संग के विकास-उन्नति प्रवृत्ति के लिये सतत क्रियाशील है। आज का शिक्षित युवा वर्ग उनके मार्गदर्शन में आने वाले उत्सवो में नयी टेक्नोलोजी के साथ ही उनके विचारो, विनय-विनम्रता, सभ्यता, सहृदयता, वृद्ध, बड़े, आमंत्रित अतिथि के साथ सदैव सभ्यतापूर्ण व्यवहार के उपर ध्यान देते है। हम सभी आप को जेतलपुर में अवसर के प्रसंग पर दी गई सूचन को हृदय से पालन करेगे तो हम अपने परिवार में उन से हुए प्रश्नो का उत्तर प्राप्त कर सकते है। इस में शंका की जगह ही नही है। श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोत्सव, २४५ वे श्रीहरि प्रगटोत्सव, श्री स्वामिनारायण म्यूजियम का १५ वाँ स्थापना दिवस आदि परम्परागत उत्सव मनाये। आने वाले अधिक ज्येष्ठ मास में पूरा वर्ष आने वाले उत्सवो को मनाने के लिये। प.पू. लालजी महाराजश्री विशेष सूचना दिये है। यह अंक जेतलपुरधाम भगवान मिलने के २०० वर्ष के "अवसर" को विशेषांक के रुप में प्रकाशित किया गया है। जिन्होने "अवसर" का प्रत्यक्ष दर्शन नही कर सके है। उन लोगो के लिये यह अंक विशेष महत्व का है।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (मार्च-२०२६)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर दियोदर (बनासकांठा) दशाब्दी पाटोत्सव महोत्सव के अवसर पर पधारना।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम की सत्संग सभा पर पधारना।

५ से ११ जेतलपुरधाम श्री रेतवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज को भगवान मिले २०० वर्ष के अवसर पर अपने सानिध्य में उल्लास पूर्वक मनाये।

१६ बालवा गाँव में माताजी की पुनः प्रतिष्ठा अनपे करकमलो द्वारा किये।

२० धोलकाधाम में ''त्योहार'' महामहोत्सव का स्थान देखने पधारे।

२७ श्री रामनवमी श्रीहरि प्रगटोत्सव के अवसर पर अक्षर भुवन बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव-महाभिषेक अपने कर कमलो से विधिवत पूर्ण किये।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारयणदेव के दर्शन हेतु पधारना।

३०-३१ केरा-कच्छ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (मार्च-२०२६)

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पूनम सत्संग सभा पर पधारना।

४ श्री नरनारायणदेव जयंती फूलदोलोत्सव अपने करकमलो द्वारा उल्लासपूर्वक मनाये गया। कालुपुर मंदिर।

५ से ११ जेतलपुरधाम श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का २०० वर्ष पर भगवान का मिलन के अवसर पर अपनी अध्यश्रता में उल्लासपूर्वक मनाना।

२० धोलकाधाम ''त्योहार'' के स्थल पर पधारना।

२७ श्री रामनवमी श्रीहरि प्रगटोत्सव के दिन पर बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज के प्रगटोत्सव की आरती १०-१० बजे पधारे - कालुपुर मंदिर।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर म्यूजियम के १५ वे स्थापना दिवस पर पधारना। श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।



भगवान भण्यानो

अवसर

जेतलपुर

जेतलपुरधाम की महिमा

जेतलपुर गाँव गुजरात राज्य के अहमदाबाद जिले के दसक्रोई तालुका में आता है। यह गाँव अहमदाबाद के दक्षिण दिशा में लगभग १६ कि.मी. दूर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या ४८ के (NH-48) पर बाँये हाथ पर स्थित है। यहाँ पर भगवान श्री स्वामिनारायण का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है । यह धाम ''जेतलपुरधाम'' नाम से प्रसिद्ध है। इस धाम की महिमा निम्न है।

भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा निर्मित मंदिर :

● भगवान श्री स्वामिनारायण ने कुल ९ मंदिर बनवाये थे। जिस में जेतलपुर पाँचवे क्रम पर आता है।

● सद्गुरु आनंदानंद स्वामी द्वारा द्विमंजिल शिखरबद्ध मंदिर का निर्माण करवाये थे।

● संवत १८८२, फाल्गुनवद-८ के दिन श्री रेवतीजी बलदेवजी महाराज की प्राण प्रतिष्ठा भगवानने स्वयं की थी।

● श्री रेवती बलदवेजी महाराज के दर्शन से भक्तो की मनोकामना पूर्ण होती है।

● पूर्णिमा और उत्सव के दिन पर विशाल संख्या में भक्त पदयात्रा करके दर्शन हेतु आते है।

जेतलपुरधाम में श्रीरेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का द्विशताब्दी महोत्सव "भगवान के मिलने का अवसर"

जेतलपुरधाम में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की द्विशताब्दी महोत्सव के अन्तर्गत श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति धर्मकुल वंशीय परम पूज्य १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान पर ''भगवान मिले का अवसर'' की अलौकिक प्रोग्राम ता. ५ मार्च से ११ मार्च २०२६ के मध्य जेतलपुर में अति विशाल रुप में किया गया। इस पावन महोत्सव पर भक्ति, श्रद्धा और आध्यात्मिक आनंद का अनुभव हुआ। लाखो हरिभक्तो ने भगवान के सानिध्य का लाभ उठाया था।



उत्सव के विशेष आकर्षण

''न भूतो न भविष्यति'' - अद्वितीय और अलौकिक एतिहासिक आयोजन जेतलपुरधाम के पास लगभग ३०० एकड इतनी विशाल भूमि पर यह विशाल महोत्सव का प्रबन्ध किया गया था । उसमें से १५० एकड जमीन पर धार्मिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा राष्ट्रीय सुरक्षा सम्बन्धित अनेक विशेष प्रदर्शन और प्रकल्पो का प्रबन्ध किया गया था । जो भक्तो के लिये ज्ञान और प्रेरणा के केन्द्र बिन्दु बने थे । इस महोत्सव में हजारो हरिभक्तो के सुविधा को ध्यान में रखकर पार्किंग की व्यवस्था की गयी थी । ठहरने और भोजन करने के लिये ५० एकड में रसोई तथा भोजन विभाग बनाया गया था । जहाँ पर प्रतिदिन हजारो प्रसादी का लाभ उठाये थे । तथा दूर से आने वाले हरिभक्तो के लिये ठहरने की व्यवस्था की गयी थी । प्रत्येक हरिभक्त बिना रोक टोक के महोत्सव का लाभ लिये थे । यह पूर्ण प्रबन्ध और आध्यात्मिकता का अद्‌भूत योग बना । सच्चे अर्थ में ''न भूतो न भविष्यति'' को सार्थक करता है ।

श्री जेतलपुरधाम के इस द्विशताब्दी "अवसर" महोत्सव के मुख्य आकर्षण

बद्रीनाथ प्रवेश द्वार : बद्रीनाथ प्रवेश द्वार - दिव्य अनुभूति का प्रतीक हिन्दु सनातन संस्कृति का पवित्र चारोधाम में एक बद्रीनाथधाम का अलौकिक स्वरुप को प्रतिबिंब करता यह भव्य प्रवेश द्वार महोत्सव का मुख्य आकर्षण बिन्दु था ।

इस द्वार का निर्माण अर्थात् समान और कलात्मक रुप से किया गया था । उस में प्रवेश करते ही हरिभक्तो को साक्षात् बद्रीधाम प्रवेश का अनुभव हुआ और हृदय में शांति तथा आध्यात्मिक आनंद मिला ।

इस पवित्रधाम में भगवान विष्णु बद्रीनारायण के रुप में ध्यान मुद्रा में विराजमान है । जो भक्तो को ध्यान, भक्ति और आंतरिक शांति का संदेश देते है । नर और नारायण ऋषि के साथ जुडा यह धाम अति प्राचीन और पवित्र माना जाता है ।

स्वामिनारायण सम्प्रदाय से जुडे नरनारायणदेव की पवित्र परम्परा को उजागर करने के लिये इस द्वार का विशेषकर आयौजन किया गाया था । यह भक्तो को सम्पर्दाय के मूल तत्वो के साथ जोडता जीवंत प्रतीक बना है ।

यह दिव्य रचना मात्र प्रवेश द्वार ही नही थी । यह भक्तो के लिये आध्यात्मिक यात्रा की जीती जागती एक पवित्र सेतु का काम की यह पूरे महोत्सव का आकर्षण केन्द्र बना रहा ।

विजय स्तम्भ : महोत्सव के इस भव्य और दिव्य आयोजन में सनातन संस्कृति का अद्वितीय प्रतीकरुप ''विजय स्तम्भ'' विशेष आकर्षण केन्द्र था । हिन्दु परम्परा के अनुसार किसी भी शुभ कार्य के पूर्व विजय स्तम्भ की स्थापना यह धर्म का अधर्म पर, सत्य का असत्य पर, दिव्यताकतो का अविजय विजय का संकल्प दिखाता है । यह पवित्र परम्परा मूल वैदिक काल तक जाती है । जहाँ यज्ञो में सुख स्तम्भ द्वारा देवताओ को आमंत्रित किया जाता था ।

विशेष गौरव की यह बात है कि सम्प्रदाय के इतिहास में सर्व प्रथम इस महोत्सव में तांबा और पीतल से बने लगभग ५१ फीट ऊँचा भव्य विजय स्तम्भ स्थापित किया गया था । यह एक रचना मात्र नही, पूरे महोत्सव की विशालता, शौर्य और आध्यात्मिक ऊर्जा की जीवित प्रतीक थी । इस पवित्र विजय स्तम्भ की स्थापना प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के पवित्र हस्त कमलसे हुआ । यह क्षण पवित्रता तथा महिमा से पूर्ण क्षण बना गया था ।

यह विजय स्तंभ मात्र एक आकर्षण का केन्द्र ही नही था । लेकिन प्रत्येक हरिभक्त के हृदय को गद्‌गद तथा भक्ति से पूर्ण कर देता था ।



गौ-शाला : सनातन हिन्दु संस्कृति में प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय में "गौ-माता" को मात्र एक प्राणी ही नही उसे आध्यात्मिक ऋण, पवित्रता और समृद्दि का प्रतीक माना जाता है। शास्त्रो में गौ-माता को सभी देवताओ का निवास स्थान माना जाता है। और मानव जीवन की औषधी, आहार और संस्कार के साथ अटूट सम्बन्ध रहा है।

इस दिव्य परम्परा की जीवित झाँकी दिखाती गौ-शाला का प्रबन्ध जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव में एक



यादगार हृदय स्पर्शी पलवन गया था। इस गौशाला में नित्य गौ पूजा, नवस्पर्श, गौसंस्कार जैसे कार्यक्रम भक्तोने गौसेवा और संस्कृतिके साथ जोडते थे। विशेषकर लगभग २५ गीर गायो का पवित्र संवर्धन यहाँ पर किया गया। जो भक्तो के लिये विशेष आकर्षण का केन्द्र था।

नवधाम दर्शन : परमकृपालु परमात्मा, परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण श्री स्वामिनारायण भगवान द्वारा अपने समकालीन समय में स्थापित किये ९ नव पवित्र धामो की ऐतिहासिक रुप में महोत्सव में नव मंदिरो की समान प्रतिकृति बनाई गयी थी। इन प्रतिकृतियो में मंदिरो के अनुसार देवो की स्थापना की गयी थी । जो भक्तो के लिये अद्वितीय आध्यात्मिक अनुभूति का केन्द्र बना था।

इस दिव्य आयोजन द्वारा स्वामिनारायण संप्रदाय के पवित्र नव धामो काम दर्शन एक स्थान पर मिला। लगता है कि हरिभक्तो की पृथ्वी पर ही अक्षरधाम का साक्षात् दर्शन मिल रहा हो।

देश-विदेश से लाखो यात्रियो और हरिभक्तो को एक जगह पर नव धाम का दर्शन करके आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त किये। नवधाम का पवित्र फलप्राप्त किये। तथा जीवन को सफल बनाये।

यह प्रतिकृतियाँ मात्र कलात्मक निर्माण नही था। लेकिन भक्तो को भगवत् प्राप्ति, परम्परा और आध्यात्मिक यात्रा का जीवित अनुभव देने वाला एक दिव्य साधन बना। यह सभी के हृदय में शांति-प्रेम प्रगट कर दे ऐसा संगम था।























जेतलपुर द्विशताब्दी महोत्सव - प्रदर्शन विभागो का विस्तृत वृतांत : जेतलपुर में मनाये गये द्विशताब्दी महोत्सव एक एतिहासिक और आध्यात्मिक अवसर के रुप में मनाया गया था। इस महोत्सव के मध्य भक्त और मिलने वाले के लिये एक भव्य प्रदर्शन खंड तैयार किया गया था। जो पूरे महोत्सव का मुख्य आकर्षण बना था।

इस प्रदर्शन खंड में परमकृापलु परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान का उनके जीवन के समय किये गये लीलाओ का जीवंत स्वरुप प्रस्तुत किया गया था। विशेषकर जेतलपुर में उनका ३८५ दिन का अलौकिक निवास के समय अनेक धार्मिक, सामाजिक और आध्यात्मिक प्रसंगो के चित्र मोडल, दृश्यात्मक रुप में प्रस्तुत किया गया था। इस प्रदर्शन के माध्यम से भक्तो को ऐसा अनुभव हुआ। वे दिव्य प्रसंग के साक्षी बन रहे है।

प्रदर्शन खण्ड में भगवान के भक्तिमय विचरण का विशेष रुप से दिखाया गया था। उस में पवित्र यज्ञो, सेवा कार्यो, प्राकृतिक संशाधनो का संरक्षण और समाज कल्याण के उपाय जैसे अनेक विषयो को सामिल किया गया था। इसी के साथ बड़े संतो और हरिभक्तो का मिलन, सत्संग की महिमा तथा ज्ञान वर्धक उपदेशो को सुंदर रुप में प्रस्तुति किया गया था।

विशेष नोंधपात्र विजय यह है कि वचनामृत के पाँच प्रमुख वचनामृत जो महाराजने जेतलपुर में स्वमुख से कहे थे। उसे भी प्रदर्शन में रखा गया था। ये वचनामृत भक्तो के आध्यात्मिक उत्थान के लिये मार्गदर्शक के रुप मे है।

जेतलपुर मंदिर द्विशताब्दी महोत्सव में सामाजिक समरसता का उत्कृष्ट चित्र द्वारा संदेश : जेतलपुर मंदिर के द्विशताब्दी महोत्सव के अवसर पर भव्य और आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। यह महोत्सव मात्र धार्मिक ही नही परंतु सामाजिक जागरण और समरसता का प्रिय संदेश देने वाला था।

भगवान स्वामिनारायण ने अपने समय से समाज मे समरसता, समानता और एकता का भाव प्रस्थापित किये थे। इस महोत्सव के मध्य इस संदेश को जीवंत किया गया था। विशेषकर सामाजिक समरसता को दिखाते हुए आकर्षक प्रदर्शन सभी के ध्यान को आकर्षित किया।

इस प्रदर्शन में लगभग ४५ फुट लम्बा १० फुट ऊचाईवाला विशाल चित्र बनाया गया था। इस चित्र में स्वामिनारायण संप्रदाय के समकालीन समय के अनेक जाति, वर्ण के भक्तो की कैसी एकता और भक्तिभाव के साथ जुडे थे। उसे दिखाया गया था। महाराज के साथ सभी जाति के प्रमुख दिखाये गये। यह दर्शाता है कि स्वामिनारायण सम्प्रदाय मे किसी भी प्रकार का भेदभाव नही है। सभी लोग समान है। लगभग ७२ जातियाँ चार वर्ण के लोग एक धर्म, भावना से जुडे थे यह समाज में व्याप्त भ्रांतियो को दूर करने का शक्तिशाली प्रयास था।





अखंडधुन-भक्ति और समरसता का दिव्य दर्शन : भगवान श्री स्वामिनारायण के पवित्र स्मरण के साथ जुडे अखंड धून महोत्सव में सत्संगी हरिभक्तोने अद्‌भूत भक्ति भाव व्यक्त किये। अनेक तालुका में से आये हरिभक्त तीन-तीन घंटे के अंतराल में धुन प्रार्थना किये थे। जो भक्ति और एकता का जीवीत प्रतिबिंब बना था।

इस अवसर पर ढोल, नगारा, ताल और मंजीरा के मधुर आवाज के साथ ''स्वामिनारायण'' महामंत्र की गुंज से पूरा परिसर आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया था। हरिभक्तो के उत्सव से भजन-कीर्तन के महोल से भाव विभोर और दिव्यता का अनुभव किया।

इस महोत्सव में शहर गाँव तथा विदेश से आये ५०,००० से अधिक हरिभक्त उपस्थित हुए थे। अखंड धुन का लाभ लिये ते। दर्शन करने वाले श्रध्धालु भी भजन का स्वार्पिम लाभ लिये थे।

फ्लावर शो और ग्लो गार्डन- प्रकृति, पर्यावरण और आध्यात्मिकता का अनोखा संगम : महोत्व के मध्य भव्य फ्लावर शो और ग्लोगार्डन पूरे कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण केन्द्र था। सभी मार्गो के दोनो तरफ छोटे-बड़े रंग-बिरंगे फूल के पौधे लगाये गये थे। लगभग २०,००० वर्गमीटर के क्षेत्रफल में सौंदर्य का प्रदर्शन था।

इस फ्लावर शो में देश-विदेश से अनेक प्रकार के फूल तथा लगभग पाँच लाख पौधे लगाये गये थे। समाज में पर्यावरण की जागृति फैलाना, पेड लगाना, तथा उसका संरक्षण करना सिखाया गया।

फ्लावर शो में विशेष आकर्षण रुप में भगवत गीता के उपदेश को दर्शाती ३० फुट ऊँची दिव्य प्रतिकृत फूलो द्वारा बनाई गयी थी। श्रीकृष्ण भगवान द्वारा अर्जुन को उपदेश देने वाला मनोरम दृश्य दिखाया गया था। साथ ही साथ पंचदेव स्वरुप भगवान शिव की भव्य प्रतिकृति की सुंदरता पृथ्वी पर आ गयी हो।



इस पूरे प्रदर्शन को देखने के लिये दूर-दूर से लोग आये थे। इस में निःशुल्क प्रवेश था। यह फ्लावर शो सभी को आनंदित कर रहा था।

अभी तक समप्रदाय में अनेक उत्सव मनाये गये। लेकिन इस अवसर पर फ्लावर शो और ग्लो गार्डन विशेष रुप से यादगार बन गया। यह प्रथम बार किया गया था। यह समाज में एक नई दिशा का संकेत करने वाली घटना थी।

सभा मंडप : जेतलपुरधाम के द्वि शताब्दी महोत्सव के अवसर पर निर्मित विशाल और भव्य सभा मंडप पूरे महोत्सव का आकर्षण केन्द्र बना था। मुख्य द्वार के रुप में जेतलपुरधाम मंदिर की समान प्रतिकृति तैयार की गयी थी। जिसका दर्शन करने से भक्तो के हृदय में भक्तिभाव जागृत हुआ।

इस सभा मंडप का विस्तार लगभग २६० फुट बाय ६०० फुट जितना विशाल था। एक साथ ४०,००० से ५०,००० हरिभक्त व्यस्थित रुप से बैठ सके ऐसी सुंदर बैठक व्यवस्था की गयी थी।

मुख्य मंच पर २१० भूदेव द्वारा भागवत संहिता का पाठ चला था। देश के अनेक भागो से आये ४०० संतो के लिये विशेष बैठक व्यवस्था की गयी थी। सभा मंडप के केन्द्र स्थान पर श्री रेवती बलदवेजी, हरिकृष्ण महाराज तथा धर्मकुल के पवित्र सिंहासन को स्थापित किया गया था। वक्ताश्री के व्यासपीठ पर से होने वाली कथा-वार्ता पूरे वातावरण को दिव्य बनाया गया था। इस से सभा में बैठे व्यक्ति लोग स्वर्ग जैसी अनुभूति कर रहे थे।

मुख्य मंच के पीछे जेतलपुर धाम मंदिर की थ्रीडी आकार की जिडाईन तैयार गयी थी। यह वैज्ञानिक और कलात्मक प्रस्तुतीकरण ऐसा लग रहा था कि भगवान स्वयं जेतलपुरधाम के राजस्थली में बैठकर कथा-वार्ता कर रहे हो। यह दृश्य भक्तो का हृदय स्पर्श कर रहा था। तथा उसे ऐतिहासिक अनूभिति करा रहा था।

इस भव्य सभा मंडप में विविध क्षेत्रो के अग्रणी व्यक्तियो, वेदज्ञ, राष्ट्रीय, सामाजिक और राजनीतिक अग्रणी, तथा विशेष पुरस्कार प्राप्त महानुभाव और देश की सुरक्षा के लिये समर्पित सैनिको ने उपस्थित दी थी। सभी लोग इस पवित्र स्थल पर आकर अक्षरधाम जैसी दिव्य अनुभूति का लाभ लिये।

भगवान मिले। पावन अवसर का समारोह ता. ५-३-२०२६ से ११-३-२०२६ के मध्य दिव्य और भव्य रुप से








मनाया गया । इस पवित्र अवसर पर परदेश विदेश से २० से २५ लाख हरिभक्त आये थे । इस महोत्सव द्वारा भक्तो ने धार्मिकता और पर्यावरण की समरसता के साथ अक्षरधाम के द्वार की प्राप्ति जैसी दिव्य अनुभूति किये ।

इस अवसर की विशेषता में अच्छा प्रबन्ध तथा उत्तम सेवा भाव का उदाहरण देखने को मिला । विशेषकर वृद्ध महिला और पुरुष तथा भाई-बहन हरिभक्तो को अधिक नही चलना पडे तो उसके लिये ६० से अधिक इलेक्ट्रिक कार की व्यवस्था की गयी थी । इस सुविधा के कारण से हरिभक्त सरलता से पूरे प्रांगण का अवलोकन कर सके ।

इस अवधि के बीच भगवान ने हरिभक्तो की थोडी परीक्षा भी लिये थे । प्रात शीतल वातावरण तथा धीरे-धीरे गर्मी बढने लगती थी । फिर भी हरिभक्तो की श्रद्धा उत्साह यथावत बना रहा । हरिभक्तो को गर्मी से राहत मिले ऐसी व्यवस्था भी की गयी थी । जिस में तरबूच का रस, गन्ने का रस तथा लू से बचने के लिये सभी सावधानियाँ रखी गयी थी । ठंडी लस्सी प्रसाद के रुप में दी जा रही थी । जिसे कारण हरिभक्तो को शांति तथा आनंदकी अनुभूति हुई ।





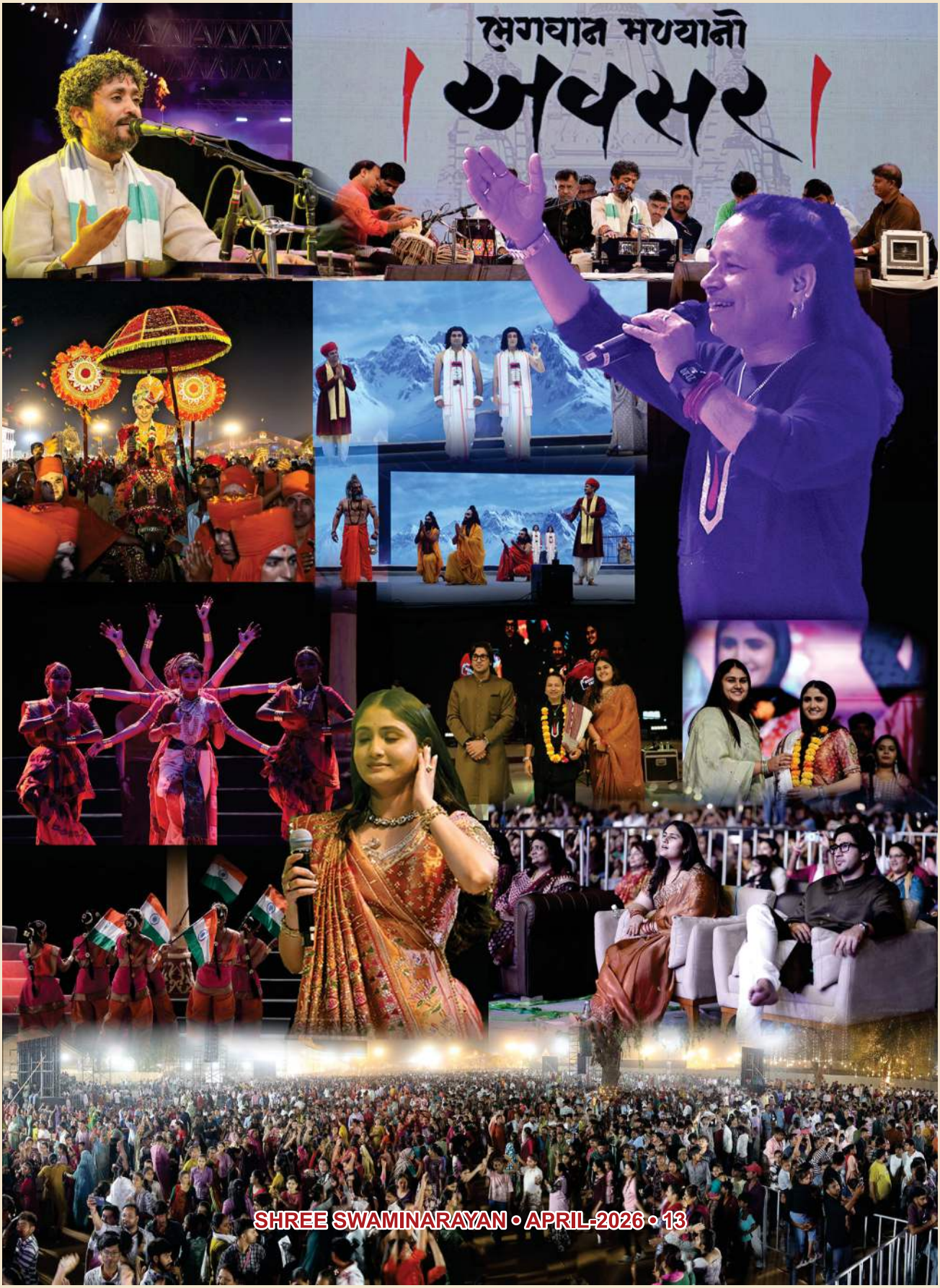
इस प्रकार इस पावन अवसर पर मात्र धार्मिक महोत्सव ही नही, बल्कि व्यवस्था, सेवा, सहानुभूति का जीवंत प्रतीक बना रहा ।

Army dome : जेतलपुरधाम में मनाये जाने वाले द्विशताब्दी महोत्सव में ''भगवान मिले'' के पावन अवसर पर अति भव्य रुप से मनाया गया । इस महोत्सव में धार्मिक भावना के साथ देश भक्ति का मेल किया गया था। विशेषकरके भारतीय सेना के तीनो विभागो – Indian Army, Indian Navy અને Indian Air Force – के कार्य कौशलता को दिखाते विशेष डोम पूरे महोत्सव के आकर्षण केन्द्र बने थे ।

इस प्रकार जेतलपुरधाम के द्विशताब्दी महोत्सव में तैयार किये गये । भारतीय सेना के तीनो विभागो को विशिष्ट डोम मात्र प्रदर्शन न होकर, देशभक्ति अनुशासन, शौर्य, समर्पण का जीवित उदाहरण था । यह प्रबन्ध महोत्सव की एक अविस्मरणीय याद बना था । प्रत्येक दर्शक के हृदय में सदा देश प्रेम का दीपक जलता रहे ।

रात्रि सांस्कृतिक कार्यक्रम :

प्रथम दिन : प्रथम दिन नाटक के रुप में ''भारतगाथा'' का वर्णन हृदय स्पर्शी रुप में किया गया था । जेतलपुर गाँव के प्रतिभाशाली बच्चो द्वारा भारतीय सनातन सांस्कृति की जीवंत नाटक का प्रदर्शन सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया । यह कार्यक्रम मात्र सांस्कृतिक ही नही बल्कि राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत भाव वाला था ।


સ્વામિનારાયણ ભગવાનનો
અવસર

द्वितीय दिन : जेतलपुरधाम के द्विशताब्दी महोत्सव के दूसरे दिन रात्रि का सांस्कृतिक कार्यक्रम एक यादगार बना गया। गुजरात ही नही, बल्कि देश-विदेश में लोक साहित्य के क्षेत्र में अग्रणी विख्यात लोक साहित्यकार राजभा गढवी की पावन उपस्थिति से पूरा वातावरण एक अलग ऊँचाई पर पहुंचा था।

तृतीय दिन - सहजानंद नाटिका : तीसरे दिन में आयोजित ''सहजानंदम्'' नाटक पूरे महोत्सव को एक अनोखी ऊँचाई पर ला दिया। स्वामिनारायण सम्प्रदाय के वैभवी इतिहास के आधार पर तथा भगवान द्वारा सुनाई गयी वचनामृत में लीला चरित्रो की सम्भालना'' जैसी अमूल्य आज्ञा को केन्द्र में रखकर यह नाटक तैयार किया गया।

राष्ट्रीय स्तर के तथा गुजरात के प्रसिद्ध कलाकारो द्वारा प्रस्तुत यह नाटक इतना प्रभावशाली था। कि दर्शको को भूतकाल की दिव्य लीलाओ का साक्षात् अनुभव हुआ। भगवान स्वामिमनारायण के जीवन के महत्वपूर्ण लीलाचरित्रो को सुंदर रुप से मंच पर प्रस्तुत किया गया। जिस में भक्ति, श्रध्धा और् आध्यात्मिक का सुमेल स्पष्ट अनुभव हुआ।

चतुर्थ दिन : रेवती-बलदेवजी-हरिकृष्ण महाराज धर्मोत्सव : रेवतीजी और बलदेवजी के पावन वैवाहिक प्रसंग की झाँकी करने के लिये भव्य लग्नोत्सव का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर वर पक्ष, कन्यापक्ष तथा मामा का पक्ष विधिवत संस्कारो के साथ हिन्दु सनातन परम्परा के अनुसार पूरा कार्यक्रम मनाया गया था। हजारो भाविक भक्तो की उपस्थिति में इस पावन अवसर का अति आनंदमय और भावविभोर बन गया था।

विवाह विधी के प्रत्येक अवसर परम्परागत रीति रिवाजो की सुंदर झाँकी दिखाई गयी थी। इस में मंडप मुहूर्त से लेकर फेरा तक अनेक विधि में आध्यात्मिक भावना दिख रही थी। पूरा वातावरण कीर्तनो के गान से गुंज उठा था। जिस में ब्रह्मानंद स्वामी के विवाह विषयक कीर्तन को मधुर स्वर मे भक्तो के हृदय को स्पर्श किया था।

इस प्रकार, यह दैवी लग्नोत्सव मात्र एक कार्यक्रम नही था। बल्कि भक्ति, संस्कृति और आनंद का जीवंत उत्सव बना था। यहाँ पर प्रत्येक कक्षण परमात्मा की प्रयसन्नता, परम्परा की पवित्रता और भक्तो के उमंग का अद्वितीय मिलाप था ? यह वर्णन पढते ही हृदय में पावन प्रसंग को देखने की ईच्छा जाग उठे।

पाँचवा दिन : भारत के प्रचलित और प्रसिद्ध गायक श्री Kailash Kher की उपस्थिति में अविस्त्रमणीय और् अनोखे प्रकार के संगीतमय कार्यक्रम का भव्य प्रबन्ध किया गया था। इस कार्यक्रम में परम्परागत बैठक व्यवस्था साथ संगीत का आनंद प्राप्त करने का विशेष प्रबन्ध किया गया था। जो युवको के लिये विशेष आकर्षम का केन्द्र था।

यह कार्यक्रम मात्र मनोरंजन तक ही सीमित नही रहा, बल्कि भक्ति, संगीत और आध्यात्मिक अद्भुत सुमेल करके सबके हृदय में छाप छोड दिये।

षष्टम् दिन : महोत्सव के छठवे् दिन गुजरात के प्रसिद्ध लोक साहित्यकार और गायिका Geeta Rabari की अनोखी शैली में भव्य संगीतमय कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

Geeta Rabari द्वारा स्वामिनारायण भगवान के भाव भीनी भजन-कीर्तन तथा गुजराती गरबा की सुगंध से पूरा वातावरण भक्ति मय बन गया था। उनके मधुर स्वर और हृदय स्पर्शी प्रस्तुति से आये हुए भाविक भक्त के अंतर में अद्भुत शांति और सुख का अनुभव हुआ। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में हरिभक्त आये थे। सभी ने संगीत और भक्ति का आनंद लिया था। लोक संगीत और आध्यात्मिक का सुंदर योग उपस्थित प्रत्येक के हृदय में अविस्मरणीय छाप छोड गया।

देश-विदेश से पधारे संतो, महंतो और विद्वान महानुभावो की पवित्र उपस्थिति : जेतलपुर मंदिर में मनाये गये। द्विशताब्दी महोत्सव का भव्य और आध्यात्मिक कार्यक्रम लगातार सात दिन तक विशेष भक्ति भाव के साथ





मनाया गया था। इस पवित्र अवसर पर देश-विदेश में से पधारे पूज्य संतो, महंतो और विद्वान महानुभावो की पवित्र उपस्थिति पूरे महोत्सव को अलौकिक महिमा मंडित किये थे।

इस महोत्सव में नेपाल से पधारे श्री हीरा बहादुर ठाकुरी तथा श्री लखपा ठाकुरी गुरंग, काशी विश्वनाथ महादेव (वारासणी) के पूजारी श्री तीर्थराज मिश्रा तथा श्री सत्यनारायण चौबे, भीमाशंकर मंदिर (पुणे) के पूजारीश्री मयुरेशरत्नाकर कोमडलकर तथा श्री जामलिंदर शंकर कौदर त्र्यम्बकेश्वर मंदिर (नासिक) के पूजारी श्री मनोजशंकर राव तुंगर, बाँके विहारी मंदिर (वृंदावन) के पूजारीश्री अनंत विहारी गोस्वामी तथा श्री विष्णु पाण्डेय, बद्रीनाथ मंदिर के पूजारी श्री भुवनचंद्र उनीपाल, अयोध्याधाम के पूज्य देवशेचार्यजी महाराज, स्वामीश्री नरेन्द्राचार्यजी महाराज, नागाश्री आशिषदास वेदांती, आचार्य अनिल शुक्ल तथा श्री आदित्यदास पहलवान, द्वारिका मंदिर के पूजारी और कथाकार श्री उत्सव पाठक, सिध्धि विनायक मंदिर के पूजारी श्री हेमंत भरवाडेकर की उज्जैन के संदीपजी वेद विद्या प्रतिष्ठासके सचिवश्री विरपाक्ष जयदीपसापल रेड्डी जैसे महानुभाव अपनी पवित्र उपस्थिति दी थी।

महोत्सव के मध्य अनेक धार्मिक विधायो पूजन-अर्चन, कथा-वार्ता, और भजन-कीर्तन जैसे कार्यक्रमो की व्यवस्था की गयी थी। इन सभी कार्यक्रमो में भक्तगण विसाल संख्या में पधारे थे। सभी ने हृदयपूर्वक भाग लिया था।

पधारे हुए महानुभावो ने अपने आशीर्वाद द्वारा जेतलपुर धाम की महिमा बताकर, भक्तो को आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर होने के प्रेरित किये थे। उनके आशीर्वाद भक्तगणो के लिये अमूल्य तथा प्रेरणात्मक रहा था।

इस प्रकार जेतलपुर मंदिर का द्विशताब्दी महोत्सव भक्ति, श्रध्धा और आध्यात्मिकता के साथ भरपूर रही। तथा सफलता पूर्वक पूर्ण हुआ था।

"स्वाभिमान भारत यात्रा" विचार के अर्न्तगत विशेष परिसंवाद : जेतलपुर मंदिर के द्विशताब्दी महोत्सव के पावन अवसर पर, मुख्य सभा मंडप में जहाँ पर कथा-वार्ता का पावन प्रवाह चल रहा था। उसी समय मे इवेन्ट ग्राउन्ड में "स्वामिनारायण भारत यात्रा" विचार के अर्न्तगत विशेष परिसंवाद का आयोजन किया गया था।

इस परिसंवाद के अर्न्तगत लगातार ६ दिन तक विविध, सामाजिक, शैक्षणिक और राष्ट्रीय महत्व के विषयो पर विशेषज्ञो द्वारा मार्गदर्शन दिया गया था। प्रत्येक दिन एक विशेष विषय को समर्पित था। जो निम्नानुसार है।

- दिन-१ (५ मार्च) - प्राकृतिक खेती और समृद्ध स्वालंबी राष्ट्र निर्माण।
- दिन-२ (६ मार्च) - भारतीय ज्ञान परम्परा और आद्यौकिक। शैक्षणिक संकलन (Indian Knowledge System)
- दिन-३ (७ मार्च) - आयुष्यमान भारत - Health and Wealth
- दिन-४ (८ मार्च) - भारत तथा गुजरात के नियम तथा भारतीय न्याय प्रणाली द्वारा राष्ट्र निर्माण।
- दिन-५ (९ मार्च) - स्वाभिमान भारत - Startup to Entrepreneur
- दिन-६ (१० मार्च) - सहकार से समृद्धि (Cooperative Development Model)

इन सभी परिसंवादो में समाज के अनेक क्षेत्रो मे कार्यरत विशेषज्ञो द्वारा अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर युवा पीढीको मार्गदर्शन दिये थे। भविष्य का विकसित भारत के निर्माण में युवको की भूमिका मजबूत हो इस लिये यह कार्यक्रम अधिक प्रेरणादायिक था।

पूरे "स्वाभिमान भारत यात्रा" के अर्न्तगत मनाये गये कार्यक्रम मे लगभग १२००० से अधिक विद्यार्थीयोने उत्साहपूर्वक भाग लिये थे। ज्ञान के साथ ही राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना का अनुभव किये थे।


Knowledge CONFERENCE
परिसंवाद
ORGANISER
Ayushman Bhava
HOLISTIC HEALTHCARE



अंत में सभी विद्यार्थी आनंद तथा भावविभोर बने । द्विशताब्दी महोत्सव की अमूल्य और जीवन भर याद क्षणो के साथ वे अपने घर की तरफ प्रस्थान किये थे ।

विशाल भोजनालय - सेवा, संस्कार और समर्पण का दिव्य केन्द्र : जेतलपुर मंदिर के द्विशताब्दी महोत्सव के पावन अवसर पर भोजनालय एक अनोखा और अद्वितीय सेवा कार्य बन के उभरा था । यह भोजनालय मात्र भोजन बनाने का स्थल नही था । परन्तु भक्ति, समर्पण और सहकार की जीवंत प्रतिकृति भी थी ।

विशालता और व्यवस्था का अद्भूत संयोजन था । इस भोजनालय में एक साथ लगभग दो लाख भक्तो के लिये भोजन बनाने की क्षमता थी । प्रतिदिन सुबह दोपहर और शायं तीनो समय पर दो से तीन लाख भक्तगणो के लिये पौष्टिक व्यंजन तैयार किया जाता था ।

इस महाकार्य सेवा कार्य में पीछे १६० लोग विशेषज्ञ वाले रसोईयाँ, ३०० लोग सहयोगी और लगभग ५०० लोग नि:स्वार्थ स्वयं सेवक सतत सेवा दे रहे थे । उनकी अविरत मेहनत और तन, मन से की गयी सेवा से इस भोजनशाला की सफलता का मुख्य बल बना था ।

भक्तो को सुविधा पूर्वक भोजन मिले । इसके लिये २०० फूट पाय १०० फूट के ११ विशाल डोम बनाये गये थे । जिस में एक साथ २५,००० से ३०,००० जितने भक्त भोजन कर सकते थे । लगातार १६ घंटे तक भोजन की व्यवस्था ७ दिन तक लगभग १२ लाख से अधिक भक्तोने प्रसाद ग्रहण किया था ।

संतो के लिये विशेष भोजन प्रसाद, यजमानो के लिये अलग व्यवस्था तथा सांख्ययोगी बहनो के लिये विशेष भोजन की व्यवस्था । यह सब सुनियोजित और संवेदनशीलता दिखाती है । हर दिन मेनू में विविधता थी । जो भोजन मात्र पोषण ही नही बल्कि आनंद और तृप्ति देता था ।

विशेष नोट करने की बात यह थी कि पूरा भोजन को शुद्धता और स्वस्छता की प्राथमिकता दी जाती थी । मिनरल वाटर का प्रयोग किया गया था । वही पर ई-प्लान्ट स्थापित किया गया था । यह प्रबन्ध की उच्च गुणवत्ता एवम् प्रतिबद्धता को दिखाता है ।

यह पूरा भोजनालय मात्र अन्नपूर्णा की सेवा ही नही था । लेकिन भक्तोने स्वामिनारायण भगवान का प्रसाद के रुप में अन्न स्वीकार करके अक्षरधाम की अनुभूति देने वाला एक दिव्य साधन बना था । प्रत्येक भक्त के चेहरे पर दिखने वाली तृप्ति और आनंद यह सेवा कार्य के सफलता का जीवंत प्रमाण था ।

यात्रीयो को ठहरने के लिये आवासीय व्यवस्था : इस महोत्सव के समय यात्रिको के लिये सुव्यस्थित और विशाल आवास व्यवस्था बनाई गयी थी । लगभग दूर से बारह हजार भाई और बहन साथ रह सके । ऐसी सुविधा दी गयी थी । इसके लिये एक पूरी ''नगरी'' जैसी संरचना की गयी थई । जिसमें रहने, नहाने और दैनिक पूजा पाठ के लिये सभी आवश्यक सुविधा का समावेश किया गया था ।

बाहर से आने वाले स्वयं सेवको, यात्रिको तथा संहिता पाठकने वाले भूदेवो के लिये आवास व्यवस्था की विशे, सुविधा थी । इसमें अनुसाशन और आध्यात्मिक की सुंदर संकलन था ।

विशेषकर, भगवान स्वामिनारायण द्वारा दी गयी शिक्षापत्री के नियमो के अनुसार रहने की व्यवस्था की गयी थी । जिस के कारण पूरा वातावरण पवित्र, नियमित बना हुआ था । इस प्रबंध और संकलन के द्वारा ही विशाल मात्रा में यात्रियो को दर्शन सुविधा दी जा सकती है ।

इस प्रकार सुव्यवस्थित और दर्शनानिकता से समृद्ध आवास व्यवस्था इस द्विशताब्दी महोत्सव का एक विशेष आकर्षण बना है ।

द्विशताब्दी महोत्सव पवित्र रथयात्रा : श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर में द्विशताब्दी महोत्सव के पावन अवसर पर भव्यदिव्य आयोजन किया गया था । इस महोत्सव के मुख्य हेतु भगवान श्री स्वामिनारायण के उपदेशो, संस्कार और दार्शनिक मूल्यो को प्रत्येक समाज वर्गतक पहुँचाना था । पूरे धर्मकुल तथा संतो-महंतो के आशीर्वाद से यह महोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया ।

द्विशताब्दी महोत्सव के पावन पर्व पर देश-विदेश में अनेक धार्मिक - सामायिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमो का आयोजन किया गया था । इन सभी प्रवृत्तियो में गाँवो-गाँव से हरिभक्त उत्साह श्रद्धा सेवाभाव के साथ सक्रिय भाग लिये थे । महोत्सव को लोक व्यापी बनाने के लिये विशेषपूर्व तैयारी की गयी थी ।

इसके अर्न्तगत एक अनोखी प्रेरणादायी यात्रा का प्रबन्ध किया गया था । जिसमें श्री रेवती बलदेवजी के साथ हरिकृष्ण महाराज की प्रतिकृति वाली पवित्र रथ तैयार किया गया थआ । यह रथ गुजरात के ग्रामीण भाग से लेकर शहर तथा गाँवो में घुसाकर महोत्सव का आमंत्रण सभी हरिभक्तो, समाज के सभी वर्गो एवम् सामान्य प्रजा तक पहुँचाया गया था । यह यात्रा आमंत्रणातक ही सीमित नही रही बल्कि भक्ति, एकता संस्कार का जीवंत प्रसारण था । छ महिना तक विचरण किया था ।

इसके पश्चात् महोत्सव के अवसर पर अनेक कार्यक्रम किये गये थे । जैसे कि भजन-कीर्तन, सत्संग सभाये, धर्मयात्राये, भजन संध्या तथा सामाजिक क्रिया-कलाप, हरिभक्त गाँवो में जाकर लोगो में जागृति फैलाये थे । और महोत्सव में भाग लेने के लिये प्रेरणा दिये थे ।

महोत्सव के बीच मुख्य सभा मंडप में सात दिन तक अनेक आध्यात्मिक तथा प्रेरक कार्यक्रम किये गये । प्रतिदिन प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, तथा इश महोत्सव के अध्यक्ष प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का पावन-आशीर्वाद प्राप्त हुआ । उन्होने अपने प्रवचन के द्वारा हरिभक्तो का देव के प्रति निष्ठा, जेतलपुरधाम की महिमा तथा एकता बी कात किये ।

पोथीयात्रा - उत्सव का भव्य प्रारम्भ : सात दिवसीय महोत्सव का शुभारम्भ पोथीयात्रा से की गयी थी । भारतीय सनातन वैदिक परम्परा के अनुसार मनाई गयी । यह पोथीयात्रा भव्य और आकर्षण रही थी । लगभग २५० संहिता पाट के साथ अनेक सुशोभित रथो में पोथीयात्रा मुख्य आकर्षक लग रहा था ।

यजमानश्री के मस्तक पर सोफा बांधकर अवसर मार्ग से पोथीयात्रा प्रारम्भ की गयी थी । जो मुख्य बद्रीनारायण गेट तक गयी थी । और वहाँ से सभामंडप में प्रवेश करके व्यासपीठ तक गौरवपूर्णरुप से आगे बढी थी ।

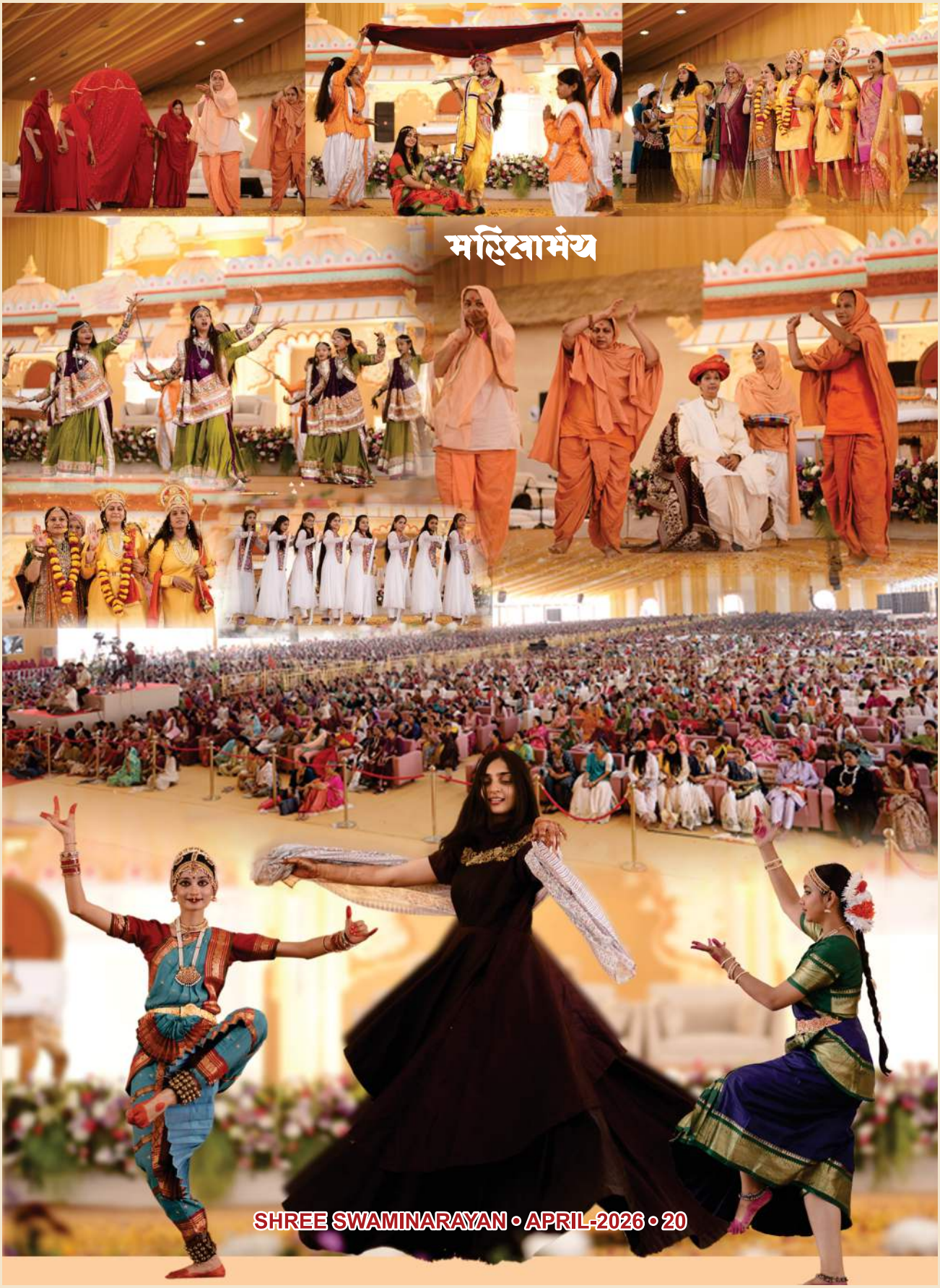
इस पोथीयात्रा में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के पावन अध्यक्षता में पूज्य संतो तथा यजमानश्री की विशाल उपस्थिति में भक्तिभाव पूर्ण वातावरण में सफलता पूर्वक पूर्ण की गयी ।

महिला मंच : भगवान मिले इस पवित्र अवसर पर आयोजित द्विशताब्दी महोत्सव के मध्य मुख्य सभा मंडप में विश्व महिला दिवस के अवसर पर दिव्य और भावपूर्ण उत्सव किया गया । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री और पू. राजाकी अध्यक्षता में महिला मंच द्वारा अनेक सांस्कृतिक और व्यवहारिक नाट्य प्रदर्शन किया गया था । जिस में जीवन मूल्य संस्कार तथा आध्यात्मिक के साथ जुडे संदेस को बताया गया था ।

इस कार्यक्रम मे ज्ञानी सांख्ययोगी बहनो के मार्ग दर्शन से युवतियो के लिये संस्कार युक्त और उज्जव भविष्य की प्रेरणादायक दिशा निर्देश बताया गया था । विशेष बात यह रही कि ८ मार्च, विश्व महिला दिवस के पवित्र अवसर पर इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था । जो यह विशेष अवसर था ।

देश-विदेश से हजारो से अधिक बहने उपस्थित रहकर इस कार्यक्रम का लाभ ली थी । और प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा पू.राजा के आशीर्वाद को प्राप्त करने का सुनहरा अवसर मिला । पूरे कार्यक्रम के समय देव की महिमा मजबूत हुई ।




महिलामंथ

नीति, धर्म को जीवन में उतरने तथा समाज में धर्म की सशावत स्तापना हो। इस उद्देश्य से प्रस्तुतीकरण किया गया था।

इस प्रकार महिला मंच द्वारा आयोजित कार्यक्रम पत्ते-पत्ते पर सत्संग फैले और समाज में संस्कार सदाचार और आध्यात्मिकता का बीज बोये। यह महत्व पूर्ण विषय हो।

मलिन जल शुद्दिकरण केन्द्र : द्विशताब्दी महोत्सव के शुभ अवसर पर पर्यावरण संरक्षण और जल संरक्षण पर एक अनोखी पहल की गयी थी। प्रतिदिन ढाई से तीन लाख लीटर मलिन जल का शुद्धिकरण करके उसे पुन: प्रयोग मे लिया गया। शुद्ध किये जल से कृषि कार्य हेतु आस-पास के किसानो को दिया गया था। जिस के कारण पानी का योग्य संचालन एवं संवर्धन हो सका था।

इस अवसर के लिये विशेष रुप से महोत्सव के मैदान में ही मलिन जल शुद्दिकरण केन्द्र की स्थापना की गयी थी। सम्प्रदाय के इतिहास मे इस प्रकार का पर्यावरण लक्षीय और



ग्लोबल एक्सबुक आफ रेकार्ड के रिकाई स्वीकार करते धर्मकुल।

जल संचय आधारित कार्य पहलीवार किया गया था। जो एक प्रेरणा साबित हुई।

यह महत्वपूर्ण सेवा और पर्यावरण के प्रति जागृति को मान्यता देते हुए। ग्लोबल एक्स बुक आफ रिकार्ड द्वारा एवार्ड दिया गया था। जेतलपुर का यह द्विशताब्दी महोत्सव के मध्य हुए भगवान मिले के पवित्र अवसर को गौरव पूर्ण बना दिया। इसकी प्रसिद्धि देश-विदेश तक हुई। यह एक सकारात्मक संदेश था।

इस सेवा कार्य द्वारा मात्र जल संचय ही नही बल्कि प्रकृति का रक्षण और स्थायी विकास के लिये एक उत्तम उदाहरण था।

मंत्र मंदिर : पिछले तीन वर्ष से भक्तो द्वारा श्रद्धा भाव से लिखा स्वामिनारायण महामंत्र का लेखन की नोटबुक और मंत्र बुक का विशाल प्रदर्शन किया गया था। इस में तीन लाख से अधिक मंत्र लेखन संकलित था। कुल मिलकर पाँच करोड से अधिक महामंत्र का लेखन द्वारा भक्तिपूर्ण अर्पण किया गया था। यह महोत्सव की आध्यात्मिक ऊँचाई दिखाता है।

"प्रत्येक घर कीर्तन" : इस महोत्सव में "प्रत्येक घर कीर्तन" अभियान एक मजबूत आधार स्तम्भ बना था। जिस में से ६५० गाँवो में २०० घंटे की अखंड धून तथा २०० गाँवो में २०० मिनिट की अखंड धुन की गयी थई। जिस के द्वारा भक्ति भाव का व्यापक प्रसार किया गया था।





षोडशोपचार : विशेष महोत्सव का केन्द्रबिंदु मुख्य मंदिर था। यहाँ पर विराजमान श्री रेवती बलदेवजी, हरिकृष्ण महाराज और बाल घनश्याम महाराज का दिव्य दर्शन भक्तो को मिला। इन सात दिनो में प्रतिदिन मंगला आरती के साथ मंदिर को विविध रुप के सुगंधित पुष्पो द्वारा सजाया गया था। पूरा मंदिर का प्रांगण आकर्षित बिजली की सजावट से पूर्ण था। जो भक्तो को अति आनंदित कराके भक्तिभाव जागृत कर रहा था।

सात दिन विशेषकर केसर का अभिषेक सुंदर से किया जाता था। जब कि फाल्गुन वद-८ से ११ मार्च को पाटोत्सव

के पवित्र दिन पर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा षोडशोपचार के साथ मुख्य पूजा और अभिषेक करके बलदेवजी दादा का अभिषेक किया गया था। यह पवित्र क्षण भक्तो के लिये अविस्मरणिय बना था।

पूरे महोत्सव के मध्य लाखो हरिभक्त भगवान के दर्शन का लाभ लिये। दिव्यता और आध्यात्मिकता की ऊर्जा से परिपूर्ण से अवसर पर स्वामिनारायण भगवान साक्षात् विराजमान हो ऐसी अनुभूति भक्तो के हृदय में हुई। और जेतलपुरधाम में अनोखा पवित्र और भक्तिमय माहोल बना था।

"चार वेद की यज्ञशाला" : जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के मध्य ''चार वेद की यज्ञशाला'' एक आकर्षण का केन्द्र बना था। यह यज्ञशाला प्राचीन वैदिक परम्परा को दिखा रही थी। जिस में ऋगवेग, यर्जुर्वेद, सामवेद और अर्थववेद के पवित्र मंत्रो के उच्चार के साथ यज्ञ की विधि हुई थी।

वेदोक्त मंत्रो की आहुति द्वारा इस यज्ञशाला में यजमानश्री तथा उनका परिवार ने पवित्र लाभ लिये थे। वैदिक परम्परानुसार इस यज्ञ द्वारा आध्यात्मिक शुद्दि, शांति और सुख-समृद्धि के लिये प्रार्तना की गयी थी।

इस यज्ञशाला द्वारा भक्तो को प्राचीन भारतीय संस्कृति और वैदिक परम्परा का दिव्य अनुभव प्राप्त हुआ था।



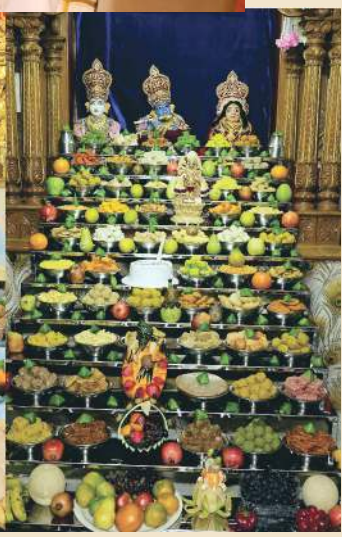


















उद्घाटन प्रसंग : श्री जेतलपुरधाम द्विशताब्दी महोत्सव के उद्घाटन पर अद्वितीय और अलौकिक भावना से पूर्ण रहा था । इस पवित्र क्षण पर भक्ति भाव से ओत-प्रोत कीर्तन ''छेल छोगालो मारे मंदिर नित्य पधारे'' के मधुर स्वर से पूरा वातावरण भक्तिमय बन गया था ।

भगवान श्री स्वामिनारायणने मातृत्व समर्पण, त्याग और अडिग श्रद्धा के भक्ति को समन्वय करके अपने हाथो से श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की जेतलपुर धाम में प्रतिष्ठा किये थे । इस पवित्र घटना को २०० वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर महोत्सव को भव्य दीप ज्योति से उद्घाटन किया गया ।

इस प्रसंग पर धर्मकुल के आशीर्वाद भी प्राप्त हुए । इस में देव के प्रति अडिग निष्ठा, हिन्दुधर्म की एकता और सद्भावना का संदेश विशाल डोम में विराजमान १५००० से अधिक सत्संगियो को दिया गया था ।

इस प्रसंग के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के माननीय सर संघचालक श्री मोहनजी भागवत उपस्थित रहे थे । उन्होने पोथी पूजा और आरती का लाभ लेकर महोत्सव का मंगल प्रारम्भ किये । अपने उद्घाटन में उन्होने कहा कि इस वर्ष संघ का भी शताब्दी वर्ष है । इससे एक जुनयिर, सीनियर से मिलने आया है । यह लगाव हँसते हुए भाव में कहे थे । साथ में बोले संघ और स्वामिनारायण संप्रदाय दोनो हिन्दू सनातन संस्कृति की रक्षा, प्रचार और राष्ट्रनिर्माण मे महत्वपूर्ण भूमिका दे रहे है । यह दोनो संस्थाये सभी सुखी हो । इस बात पर ध्यान देती है ।

साथ ही मंगल अवसर पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संग के प्रान्तीय संघ चंलालक डॉ. भरतभाई पटेल, श्री चिंतनभाई के साथ अनेक प्रान्तीय अधिकारी प्रचारको को प्रेरक हाजिरी तथा पूर्व के शिक्षापंत्री भूपेन्द्रसिंह चुडासणा, तथा पूर्व गृहमंत्री प्रदीपसिंह जाडेजा की उपस्थिति भी रही थी । ''वंदे मातरम्'' गीत के १५० वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर इसे यादगार पल बनाने के । परिसर में धर्मकुल के साथ १५००० हरिभक्त समूहगान द्वारा राष्ट्रीय चेतना का अनोखा चित्र प्रस्तुत किये ।

इस प्रकार भगवान के प्रागट्य के मंगल प्रारम्भ पर पूरा महोत्सव दिव्य, अलौकिक और अविस्मरणीय बना दिया था ।

माननीय राजपाल आचार्य देवव्रतजी : पहले दिन पर गुजरात राज्य के महामहीम राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी अपने व्यस्त कार्यक्रमो मे से समय निकालकर इस

पवित्र अवसर पर आये थे । उन्होने प्राकृतिक कृषि के महत्व, उसके लाभ तथा सरकारी अनेक योजनाओ के बारे में जानकारी दिये थे । तथा अपने अनुभव पर आधारित प्राकृतिक कृषि के बोध पाठ में से प्राप्त महत्वपूर्ण बातो को साझा किये थे ।

इस अवसर पर आस-पास के किसान तथा उत्तर गुजरात और् दक्षिण गुजरात से आये किसान हाजिर थे। राज्यपालश्री ने सभी को प्राकृतिक खेती करने की सलाह दिये थे । जिससे कृषि में सुखदायी वस्तु और स्वस्थ जीवन आगे बढे ।

राजनीतिक, सामाजिक और व्यवसायिक क्षेत्र के : इस अवसर पर कई राजनीतिक सामाजिक और् व्यवसायिक क्षेत्र के अग्रणी आये थे । जैसे संघ के क्षेत्रीय प्रचारक डॉ. श्री जयंतीभाई भाडोशिया तथा विधान सभा के उप स्पीकर श्री पूर्णेश मोदी हाजिर थे । इसके बाद गुजरात राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर के पद्मश्री पुरस्कार और पद्मविभूषण पुरस्कार जैसे उच्च सम्मान प्राप्त महानुभावो का विशेष सम्मान समारोह का आयोजन किया गया था ।

इस समारोह मे साहित्य, विज्ञान, संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले विभूतियो के प्रेरणादायक बचन प्राप्त हुए । आप लोगो की उपस्थिति सभी के लिये प्रेरणादायक रही । इसी के साथ भारत सरकार के राज्य सभा के सांसद सुघांशु त्रिवेदीजी भी पधारे थे । जिन्होने भारतीय ज्ञान परम्परा का गहराई से परिचय दिये थे ।

इस महोत्सव मे गुजरात राज्य के प्रदेश अध्यक्ष और जेतलपुरधाम की महिमा पितृ परम्परा से प्राप्त करने वाले श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा की हाजिरी नोंध करने योग्य थी । भारत की अग्रणी संस्था Indian Farmers Fertiliser Cooperative Limited (IFFCO) के अध्यक्ष दिलीप संघाणी की उपस्थिति प्रेरक थी ।

इस प्रकार गुजरात के विधान सभा के सदस्य उपस्थित होकर महोत्सव की शोभा बढाये थे । सभी को अतिथि सम्मान प्राप्त करने का अवसर मिला ।

साँतवे दिन पूर्णाहुति सत्र : साँत वे दिन की पूर्णाहुति सत्र अधिक भव्य और भाव से पूर्ण रहा । इस पवित्र अवसर पर पूरे धर्मकुल की पवितर उपस्थिति के साथ गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री भूपेन्द्रभाई पटेल उपस्थित थे । उन्होने अपने प्रेरणादायक जीवन प्रसंगो द्वारा उपस्थित सभा में नई ऊर्जा और प्रेरणा भर दी ।

इस प्रसंग के अंत में महोत्सव के अध्यक्ष प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने देव के प्रति अडिग निष्ठा, अखंड भक्ति और श्रद्धा को समझाकर महोत्सव के प्रति खुशी व्यक्त की थी । साथ में आने वाले धोलका मंदिर महोत्सव में सहभागी बनने के लिये सभी को हार्दिक आमंत्रण दिये थे ।

प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री भी सत्संग समाज के आध्यात्मिक दिये थे । और भक्तो को धर्म मार्ग पर अडिग रहने की प्रेरणा दिये थे ।

अंत में परम पूज्य धर्मधुरंधर आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के पवित्र मुखारविंद से जेतलपुरधाम महोत्सव के सभी कार्यो की प्रशंसा किये थे । वे भक्तो को देव के प्रति निष्ठा मजबूत रखे, भक्ति में अडिग रहे । शिक्षापत्री तथा वचनामृत के उपदेशो को जीवन उतारने की प्रेरणा दिये थे ।

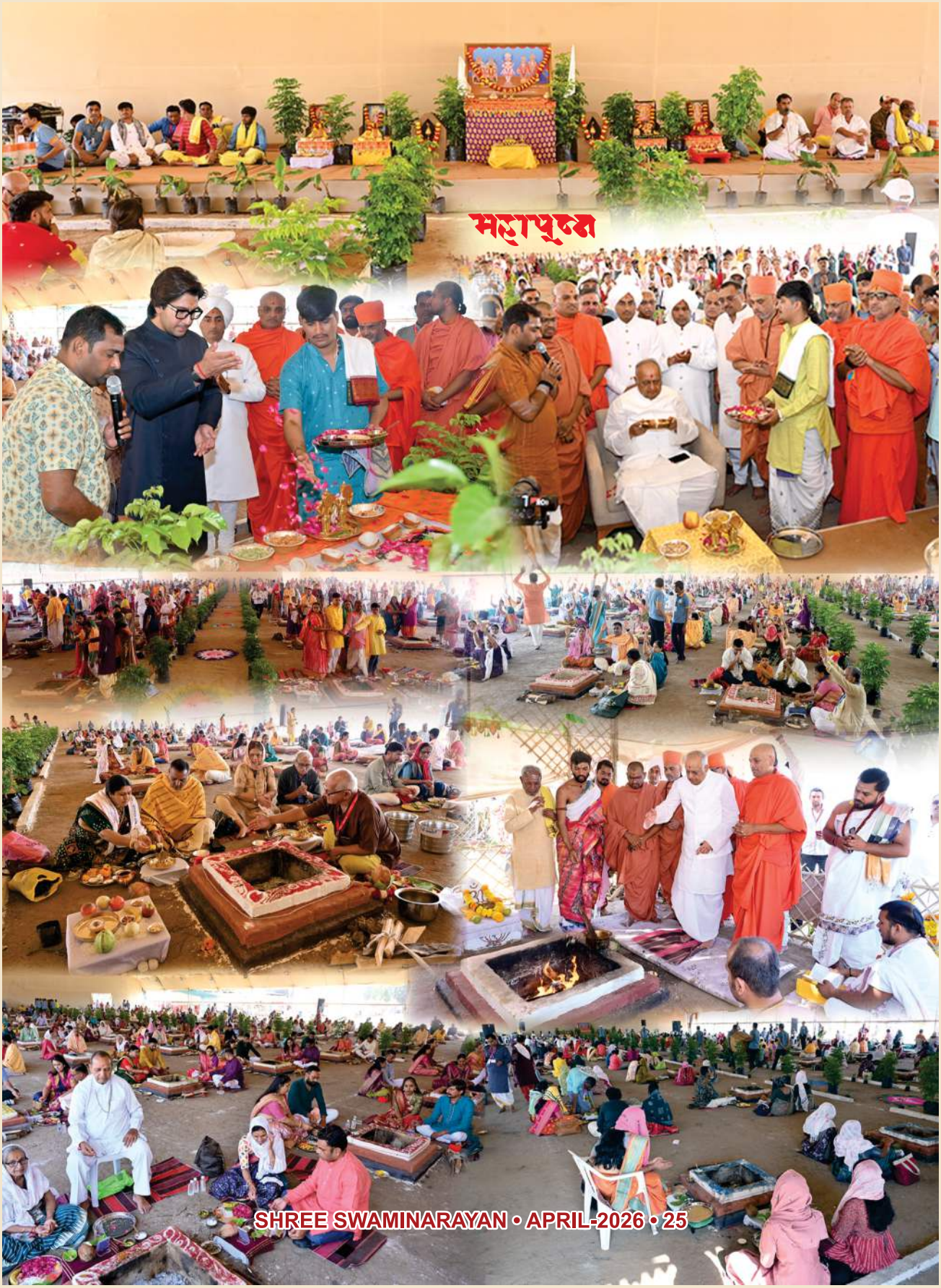
''देव की खुशी यही अपनी खुशी'' इस पवित्र वाक्य के साथ यह भव्य दिव्य और अकल्पनीय समारोह का गौरवपूर्ण समापन किया जा रहा है ।

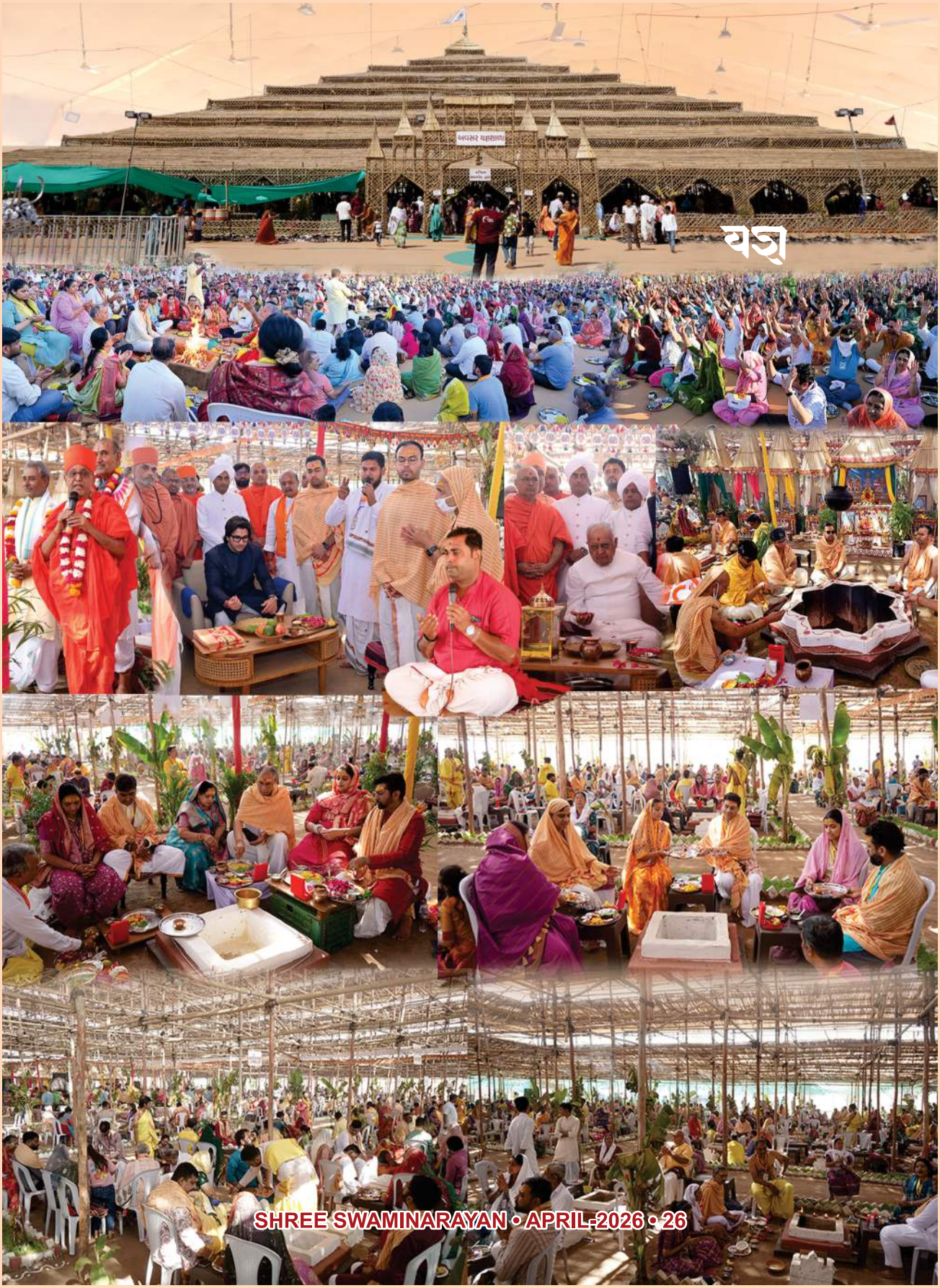
श्री स्वामिनारायण भगवान के समय का प्रसादी वाला सरोवर अर्थात् देव सरोवर : जेतलपुर मंदिर के द्विशताब्दी महोत्सव मे ''भगवान मिले'' के पवित्र अवसर के मध्य यह दिव्य देव सरोवर को रंग-बिरंगे वस्तुओ से सजाया गया था । सातो दिन के बीच रात्रि के समय लाईट और साउन्ड शो तथा वाटर स्कीन लेजर शो का भव्य प्रबन्ध किया गया था । जो भक्तो के लिये आकर्षम का केन्द्र बना था।



देवसरोवर की रोशनी और् आरती उतारते संत ।




महापूजन


યજ્ઞ

इस के बाद, दस हजार दीपक द्वारा देव सरोवर का भव्य पूजन किया गया था। जिससे पूरा परिसर भक्ति भाव से भरा था । प्रतिदिन पूजा-अर्चना और विधिवत पूजा द्वारा प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गयी थी।

यह पूरा आयोजन "जल बचाये-राष्ट्र बचाये" जैसे प्रेरक संदेश के साथ जुडा था । जो भक्तो को पर्यावरण संरक्षण और जल संचय के लिये प्रेरित करते थे।

होमात्मक समूह महापूजा : भगवान श्री स्वामिनारायण के समय की परम्परा का अनुसरण करके भव्य होमात्मक समूह महापूजा का आयोजन किया गया थआ। इस महापूजा मे ८१ कुंडी तथा पाँच आवरण के साथ कुल १२५ भूदेवो की हाजिरी में वैदिक विधि द्वारा पूजा और ध्येय किया जाता था।

प्रत्येक आवरण में लगभग २५० सपत्नी यजमान महापूजा का लाभ लेते थे। इस प्रकार दिन में लगभग १००० यजमान भक्ति भाव से महापूजा में भागले कर होम में आहुति देते थे। और शांति तथा धन्यता का अनुभव करते थे।

यह पूरा आयोजन भक्ति, श्रद्धा और वैदिक संस्कृति का जीवंत प्रतीक बनता था । इस में हजारो हरिभक्त उमंग पूर्वक भाग लेकर आध्यात्मिक आनंद का लाभ लेते थे।

विष्णु यज्ञ : सम्प्रदाय के इतिहास में सर्व प्रथम पाँच दिवसीय विशाल विष्णु यज्ञ का आयोजन किया गया था। इस यज्ञ में कुल २६५ यज्ञकुंड बनाये गये थे। जो विशेष आर्कषण का केन्द्र था । यज्ञ शाला के लिये लगभग २५० फुट २५० फुट का विशाल मंडप बनाया गया था। जिस में लगभग ९० फुट उची छत वास्तु शास्त्र के अनुसार काष्ठ और घास से बनाई गयी थी।

इस यज्ञ में लगभग ७९५ से अधिक यजमानो ने पाँच दिन तक पूजा होम करने का पवित्र लाभ लिये थे। यज्ञ विधि के लिये कुल २७५ भूदेवो (ब्राह्मणो) कावरण किया गया था। लगभग २०० स्वयं सेवक यज्ञशाला में अनेक सेवाओ से जुडे ते।

यज्ञ का प्रारम्भ ऋषि और वैदिक परम्परा अनुसार अग्नि मंथन विधि द्वारा किया गया था। इस में परम्परागत रुप से अग्नि प्रज्जवलित की गयी थी। इसके बाद चारो वेदो के वेदज्ञ परम्परागत विद्वान पंडितो द्वारा पाँच दिन तक वैदिक मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ में आहुतियाँ दी गयी थी।

विष्णुयज्ञ के अर्न्तगत ब्राह्मण बटुको का समूह उपनयन विधी रखी गयी थी। २०० से अधिक ऋषिकुमार को जीवन में याद रहे ऐसा महोत्सव मे द्विज की दीक्षा प्राप्त किये।

Indian Space Research Organisation के Space Applications Centre द्वारा आयोजित अवकाश प्रदर्शन **AVSAR** ग्राउन्ड विशेष आकर्षक बना था । जिस में Vikram Sarabhai Space Exhibition मुख्य केन्द्र रहा था।

८ मिनट का प्रेरणादायक गुजराती विडियो द्वारा Aryabhata से लेकर Chandrayaan-3, Mars Orbiter Mission और Aditya-L1 जैसे भारत के गौरव पूर्ण मिशनो का जीवंत प्रस्तुतीकरण किया गया था।

प्रदर्शन क्षेत्र में उपग्रहो और राकेटो का आकर्षण माडेल जैसा कि PSLV, GSLV और LVM3 के साथ Cartosat और RISAT जैसे उपग्रहो की सूचना प्रस्तुत की गयी थी।

Gaganyaan मिशन का माडल और गगनयात्रियो के प्ररीक्षण के विषय में जानकारी दर्शको के लिये आकर्षम थी । जब कि Vikram Sarabhai के प्रेरणादायक योगदान और NavIC जैसी टेक्नोलाजी के बारे में सरल रुप से समझाया गया था।

डोम के केन्द्र में GSLV Mk III का इन्टररेक्टिव माडल शो स्टोपर के रुप में लोक आकर्षण का केन्द्र बना था।

स्वामिनारायण सम्प्रदाय द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा द्वारा वैज्ञानिक द्रष्टिकोण का उच्च समन्वय यहाँ पर भक्तोने देखा।

जेतलपुर मंदिर द्विशताब्दी महोत्सव-भूमिदान सेवा : श्री रेवतीजी बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के २०० वे पाटोत्सव के अवसर पर जेतलपुर गाँव के समस्त परमार परिवारो ने और राजपूत समाजने ३७३ बीघा जमीन सेवा के रुप में दिये। असलाली गाँव के हरिभक्तो ने भी पाटोत्सव पर अपनी सेवा दिये थे । इनकी अद्‌भूत सेवा के लिये समस्त



श्री नरनारायणदेव ट्रस्ट बोर्ड के ट्रस्टीयो का सम्मान




SALUTE TO
INDIAN ARMED FORCES


अमर जवान


OPERATION
SINDOOR


SINDOOR


26


NAIK
JADUNATH SINGH


OPERATION SINDOOR


GSLV
MK III
ISRO
INDIA
इसरो
भारत







"अवसर" उत्सव के जमीन के दाताओ का सम्मान

धर्मकुल परिवार राजपूत-परमार परिवार उपर खुश होकर आशीर्वाद दिये।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ. मोटा गादीवालाश्री, पू. श्रीराजा, पू.श्री बिंदुराजाकी विशेष उपस्थिति सात दिन तक थी।

इस में प्रातः और शायं परमपूज्य आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के देव के प्रति निष्ठा देव के प्रति भावना श्री रेवती बलदेवजी महाराज जेतलपुर के यादगार अवसर और भक्तो में एता बनी रहे। इन बातो से सत्संग समाज को आशीर्वाद दिये थे। और कहे आप लोगो को दूसरा भी देदूं। धोलका "त्योहार" का जो ६ जनवरी से १० जनवरी २०२७ "समैयो", "अवसर" मनाये है। उसी प्रकार "त्योहार" उल्लासपूर्वक मनाने का आग्रह किये।

शार्ट टेली फिल्म : जेतलपुर द्विशताब्दी महोत्सव के मध्य एक विशेष आकर्षक शार्ट टेली फिल्म का प्रदर्शन किया गया था। जो भक्तो के हृदय पर अमिट छाप छोडी थी। इस फिल्म में भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य अवतार से लेकर सत्संग के प्रचार-प्रसार के लिये अटूट प्रयासो का जीवंत भावस्पर्शी निरुपण किया गया था। साथ में ही धर्मकुल की वंशावली की अलौकिक, अकल्पनीय और अविश्वसनीय गाथा भी सुंदर रुप से की गयी थी। इस पावन अवसर पर प्रस्तुत की गई फिल्म भक्तो को भक्ति में तल्लीन कर दी थी। सभी के अन्दर आध्यात्मिक भावना जगा दी थी। ऐसी भक्ति प्रेरक और हृदय स्पर्शी फिल्म भक्तो के लिये सदा चिरस्मरणीय बनी ही।

अवसर के परिसर में सांख्ययोगी बहनो के लिये रहने के लिये जगह बनाई गयी थी। चार सौ से अधिक सांख्ययोगी बहने सात दिन तक रुकी थी।

इस अवसर पर अहमदाबाद, मूली, भुज मंदिर तथा धामोधाम से संत महंत तथा सांख्ययोगी बहनोने अवसर का लाभ लिया था।

जेतलपुरधाम अर्थात् महाराज की (या) गंगामाँ का घर, सम्प्रदाय में गंगा माँ को कौन नही जानता। ऐसी गंगामाँ और भक्तिमाता का "अवसर" के प्रसंग प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालश्री और पू.श्रीराजा ने विधिकाल्प से भावपूजन किये। तब पूरा महोत्सव अलौकिक बन गया था।

श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा : महोत्सव में सत्संगिभूषण शास्त्र की कथा रखी गयी थी। सुबह ९ से १२ बजे तथा ३ से ६ बजे तक दो सत्र में कथा का रसपान विद्वान वक्ताओ शास्त्री स्वामी निरुग्णदासजी, शास्त्री स्वामी भक्तिनंदनदासजी, शास्त्री स्वामी देवस्वरुपदासजी, शास्त्री स्वामी धर्मनंदनदासजी ने अग्रिम शैली में भक्तो को कथामृत से तरबोर किया था।

इस महोत्सव में अलग-अलग विभाग की ७२ समितियो में ३०० लोग संत और हरिभक्त और ६५०० लोग स्वयं सेवक (भाई-बहन) की टीम सात दिन निष्ठापूर्वक जिम्मेदारी के साथ सात दिन तक सेवा दिये थे। उन लोगो में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज और धर्मकुल की कृपा-आशीर्वाद अखंड बना रहे। ऐसी भगवान से प्रार्थना है।

पूनम की महिमा बढ़ी : विश्व प्रसिद्ध श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम में बिराजमान श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का पूनम दर्शन करे की महिमा प्रत्येक मास की पूनम को लाखो भक्त दर्शन करने आते है।

आज इतने अधिक संख्या में भक्त आते है तो उसका श्रेय प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने पूनम को जेतलपुर दर्शन करना प्रारम्भ किये थे। तब से लगातार भक्तो की संख्या बढ रही है। बड़े महाराजश्री का अखंड पूनम का पचास वर्ष पूरा हो गया है। इक्यावन वर्ष में प्रवेश किये है। बड़े महाराजश्री का दर्शन करने के लिये भक्त श्री रास्ता देखते है।

(महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी - महंतश्री स्वामिनारायण मंदिर - जेतलपुरधाम)

एप्रोच (बापुनगर) के नये महंत स्वामी की नियुक्ति

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) के नये महंत स्वामी के रुप में स.गु. शास्त्री स्वामी धर्मनंदनदासजी गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) को नियुक्त किया गया है।

अवसर

श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से आशीर्वचन



प.पू. बड़े महाराजश्री (सरसंघ संचालकश्री की उपस्थिति में), ता. ५-३-२०२६ : आदरणीय संतो, परम आदरणीय भागवतजी तथा प्यारे सत्संगी भाईयो, जिस ''अवसर'' का हम सभी को अधिक समय से, कई वर्षो से राह देख रहे थे । उसकी आज शुरुआत हो गयी है । ''अवसर'' अर्थात जोउचित समय पर मिल जाये । जिसे मिल जाये उसे भाग्यशाली व्यक्ति कहते है । हम सभी को इस समय का लाभ ले लेना है । श्रीजी महाराजने अपने करकमलो द्वारा प्रतिष्ठित किये । श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज उनकी महिमा इस उत्सव में अपने अन्तर में लाना है । यह यही अवसर है ।

अच्छा प्रबन्ध है । लालजी महाराज का अच्छा नेतृत्व है । और मोहन भागवतजी जैसे अपने विशेष अतिथि है । भागवतजी आप से और हमसे पटती है उसका कारण एक ही है । आपका ध्येय और हमारा समग्र संप्रदाय का ध्येय एक ही है । हिन्दुत्व का रक्षण करना क्योंकी स्वामिनारायण संप्रदाय शुद्ध सनातन वैदिक संप्रदाय है और आपका ये ही उद्देश है । हमारा भी ये ही उद्देश है जो आज के जमाने के संदर्भ में बहुत जरुरी है ।

अपना हिन्दुत्व का रक्षण करे । अपने कल्चर का रक्षण करे और अपने संस्कार का रक्षण करे और उसमें आप की संस्था देश में और विदेश में अत्यंत Active है, ये परम गौरव की बात है । जो आज आप आपसमें उपस्थित हुये । आप को अभिनंदन ।

अधिक नही कहना है । हम सभी सर्वावतारी श्रीहरि को प्रार्थना करे । कि उत्सव के मध्य श्रीहरि उत्सव में साक्षात् उपस्थित रहकर उनके प्रतिजो प्रेम है उसे दृढ करे । सभी की तथा स्वामिनारायण सम्प्रदाय की उन्नति प्रगति हो । इतना कह कर विराम दे रहा हूँ जय स्वामिनारायण

प.पू. महाराजश्री (सरसंघ संचालकश्री की उपस्थिति में), ता. ५-३-२०२६ : आदरणीय भागवतजी, उपस्थित सभी संत-हरिभक्त आपने जो विज्ञान और आचरण की बात जो की है वो सुन के लगा की अपने मनका आप कह रहे है । हम लोग का कार्य ये ही है । हम ये मानते है चाहे स्वामिनारायण संप्रदाय है, चाहे संघ है, चाहे हमारा परिवार है काम एक ही है । चाहे की हम लोग का सिध्धांत, हम लोग की परंपरा, हम लोग का अखंड भारत का सपना नही है । अखंड भारत सत्य है और अभी जो भागवतजी ने कहाँ । हम तो मानते



ही है। आखिर में आना पडेगा तो भारत देश में ही आना पडेगा। हम सभी अधिक भाग्यशाली है कि भारत देश के पवित्र भूमि पर जन्म लिये है।

और आप जो कल तीन पेढी का कहाँ। उसमें गर्व होता है। हम पर्सनल व्यक्तिगत अनुभव कह रहे है। आप सभी गवाह है। सब लोग साक्षी है क्यु की विदेश से काफी लोग आये है। आज से पच्चीस साल पहले विदेशमें जाते थे। कही हम लोग को देख लिया। कहते थे देशी आया। कही प्याज लसुन नही खाया, Vegetarian (शाकाहारी) खाया, दारु नही पीया तो कह देते। ये नही करते ? आज गर्व से बाहर जाते है। एक एक भारतीय नागरिकका सन्मान होता है। वो सन्मान के पीछे अगर सबसे बड़ा बलिदान, सबसे बडी जागृति, सबसे बड़ा उत्थान जो किया है वो भागवतजी ने किया है। उसके नेतृत्व में हमारा संघ परिवार है। उसने जो कार्य किया है ये सब देख रहे है, तब नही देख रहे थे। तीन पेढी से चल रहा है। सबने अपना अपना कार्य किया है। सबने अपना त्याग, अपना बलिदान, योगदान और समय दिया है। अपनी बुद्धि, अपना देह सबका उपयोग करके सबसे अच्छा त्याग किया है। आज हम देशमें विदेश में गर्व से चल सकते है ये परिस्थिति है जो आज हम को गर्वान्वित कर रही है।

ये जो हमारी परंपरा, हमारी समरसता, हमारा देश, हमारी उन्नति, और् विश्वशांति और विश्वशक्ति तरीके से जो खडे रहे है, उससे भारतीय नागरिक और उसमे कि हुयी जागरुकता ये हमारे धर्म से हो रही है। धर्म तो एक ही होता है। आचरण की जो बात की वो भी बड़ी बात है लेकिन एक बात हम भी कहेगे की कृष्ण भगवानने कहाँ, यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत... तो कभी भगवान कुछ सीधा करने को भी आते है। इसलिये ये सब लोग को। आप लोग को भेज दिया जाता है। आप लोग इस लिये आये है। सब लोग किसी ने किसी उद्देश्य से आते है। हम तो ये मानते है और ये उद्देश्य खोजना, ये हमारा दायित्व होता है। अपना सिध्धांत और परंपरा न गवाई जाय और उसको संस्कार के साथ जोडके हमारा दायित्व निभाया जाय ये सब से बडा धर्म है।

पिछली बार भुज में मिले थे। तब कहा था कि अहमदाबाद जरुर आयेगे। अब अगली बार छपैया आना है और हम को पत्ता है भागवतजी कहते है तो आते ही है। प्रदिपसिंह बापू है चुडास्मा साहब है, डाक्टर साहब है। बाबुभाई आप आये है। आप सभी को धन्यवाद। आप सभी लोग परिवार के है। परिवार के लोग ही आते है। विना मन के कही पर जाना, मेहनत अधिक करना पडता है। उसके अच्छा कार्य नही होता है। नही आने के हजार कारण मिल जाते है। हम लोग अधिक व्यस्त है। आप सभी को धन्यवाद।

प.पू. बड़े महाराजश्री (महामहीम राज्यपालश्री के उपस्थिति में), ता. ५-३-२०२६ : परम आदरणीय महामहीम राज्यपालश्री, आदरणीय संत गण तथा सत्संगी भाईयो। आज इस शुभ ''अवसर'' पर स्वामिनारायण सम्प्रदाय की तरफ से हमारे परिवार के तरफ से आप लोगो का प्रेमपूर्वक स्वागत है। भगवान श्री स्वामिनारायण ने स्वयं जिन नव मंदिरो की स्थापना की थी। उसमें से एक जेतलपुर मंदिर है। दो सौ वर्ष पूर्ण हो गये। सम्प्रदाय के द्वारा अनेक प्रकार की सामाजिक - प्रवृत्तियाँ और् लोक कल्याण के कार्य चल रहे है। उससे आप अवगत है। इस अवसर पर आप की उपस्थिति से चार चाँद लग गया। पुन: आप सभी को धन्यवाद। जय स्वामिनारायण।

प.पू. बड़े महाराजश्री (पद्म विभूषित मेहमानो की उपस्थिति में), ता. ६-३-२०२६ : आदरणीय संतो और पद्म विभूषित अपने सम्मानीय मेहमानो तथा प्रिय सत्संगियो आज वास्तव में आनंद मिला है। स्वामीने कहा आशीर्वाद तो ले और् ये लोग (श्रीहरि के अपररुप में ही निर्माणीयन की पराकाष्ठा सम्भव है ! इसमे से दो-तीन लोग हमारे अति प्रिय परिचित है। जब की मैं शहाबुदीनभाई से ५५ वर्ष के



बाद मिला हूँ । ५० वर्ष पहले इनके गाँव में मैं गया था । शोभायात्रा निकली थी । वह स्वयं नीचे खडे थे । किसी ने परिचय कराया कि ये शहाबुदीनभाई है । इनसे थान गाँव में मुलाकात हुई थी । फेक न्युझ सुनकर ? युद्ध का समाचार सुनकर कभी दिमाग खराब हो जाता है तो तब यू-ट्यब से इनके आख्यान सुनता हूँ । और मूड अच्छा हो जाता है ।

भीखुदान गढवी की बात करे तो पू. बापुजी को साहित्य का अधिक शौक था । बड़े-बड़े गढवी इनके पास आते थे । और लींबडी के शंकरदान गढवी सबसे प्रिय थे । बापूजी स्वयं अच्छी रचनाये करते थे । उस समय बड़े-बड़े कवियो के सम्पर्क में आने का अवसर मिलता था । चारण साहित्य के प्रति लगाव, अपने सम्प्रदाय में ब्रह्मानंद स्वामी से प्रारम्भ हुआ है । और आज तक चल रहा है । आप से मिलकर अति खुशी हुई ।

रघुवीरभाई की बात करे तो जब मैं सेन्ट जेवियर कालेज में पढता था । तब हिन्दी के टीचर बिमार हो गये । उनके बदले में पीरीयड रघुवीरभाई ने लिया था । उस समय युवक थे । माणेकपुर के चौधरी स्वयं गुजराती इसके बाद सुंदर हिन्दी । इसके लिये जाने जाते है ।

महाराजने शिक्षापत्री में आज्ञा किये है जो जिस गुण से पूर्ण हो । उसे वैसा ही सम्मान देना चाहिए । समदृष्टि करके मर्यादा का फल्लंघन नही करना चाहिए। तो इस धारा को ध्यान में रखकर अपने सम्प्रदाय की तरफ से उनका सन्मान है । जो अति उत्तम है ।

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणो में प्रार्थना करें कि अपने भारत देश को इसी प्रकार के गुणीजन मिले । आप लोगो का सम्मान यथोचित समय पर होता रहे । आप सभी को धन्यवाद देते वाणी को विराम देता हूँ ।

प.पू. महाराजश्री (पद्म विभूषित मेहमानो की उपस्थिति में), ता. ६-३-२०२६ : अभी बड़े बापजीने कहा कि विशेष कुछ नही कहना है । लेकिन आप सभी का दर्शन करके एक बात अवश्य कहेगे कि एक हेरिटेज अपनी परम्परा, अपने सिद्धान्त मानवता और अदृश्य समाज को दिशा दिये है । मै ऐसा मानता हूँ कि सरकार ने जो सम्मान दिया है । वह कम है । क्योंकि आप लोग सभी के हृदय में है । हम कईबार करते है कि दिवाल टँगने से अच्छा लोगो के दिल में बने रहे । क्योकि दीवार से हटाया जा सकता है । लेकिन दिल से नही । आप सभी लोग देश-विदेश के हजारो लोगो के दिल में स्थित है । इसके लिये हमारे पास शब्द नही है । मैं छोटा हूँ । आप सभी आये धन्यवाद ।

आप के द्वारा किया गया योगदान हमेशा बना रहे । यह अपनी परम्परा है । अपने सिद्धान्त है । जो साहित्य है । हमारे पास जो धरोहर है जो साहित्य है । अपनी जो संस्कृति है । वह दूसरो के पास नही है । आप सभी का जो योगदान है । चाहे कला, साहित्य, अंगादन जो आप लोगो का सहयोग है । प्रणाम, धन्यवाद ।

प.पू. बड़े महाराजश्री (वैष्णावाचार्य श्री वजराजजी महाराज दोशी वाडा की पोल की हाजिरी







में), ता. ७-३-२०२६ : परमश्रदेय वैष्णावाचार्य महाराजश्री आदरणीय संत प्यारे सत्संगी भाईयो । आज स्वयं पधारकर अपने उत्सव की शोभा में अभिवृध्धि के लिये धन्यवाद । स्वयं बात करके सम्बन्ध व्यक्ति किये तो कई उदाहरण है । एक दो बात करेगे मेरे पिताश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री गद्दी पर जा बैठे तब उनकी उम्र १३ वर्ष की थी । सब इनके दादा स्वयं कम उम्र के थे। कालुपुर मंदिर के सभा मंडप में आये थे । उनका फोटो भी मेरे पास है।

दूसरा उदाहरण कहे । जब पू. बापजी का रजत जयंती महोत्सव था । आज से ६४ वर्ष पूर्व १९६२ में तब उनके दादा इनके (व्रजराजजी महाराजश्रीके) पिताजी लेकर आये थे । अधिक छोटे थे ।उस समय अहमदाबाद के सभा मंडप में कुर्सी रखना रह गयी थी । बापूजीने क्या कहा ? उन्हे मेरे पास लाओ । फिर बापुजीने उनके पिता के गोद में बैठाये । यह भी फोटो हमारे पास है । ऐसे नजदीकी सम्बन्ध है।

कृष्ण भक्ति तो हमारे सम्प्रदाय के नींव में ही है । शिक्षापत्री का प्रारम्भ कृष्ण से होता है । समाप्ति भी कृष्ण की प्रार्थना से होती है । शिक्षापत्री के पेज फेरने से पता चलेगा कि कितने बार कृष्ण नाम आता है । नंद संत कई भजन कृष्ण भगवान को उद्देश करके लिखे है । तो आप अनुग्रह करके सभा में पधारे । आप को धन्यवाद यह सम्बन्ध आने वाले पीढी में बना रहे । ऐसा श्रीजी महराज के चरणो में प्रार्थना है।

प.पू. बड़े महाराजश्री (मुख्यमंत्री की उपस्थिति में), ता. ११-३-२०२६ : आदरणीय संतो, अपने प्रिय मुख्यमंत्री का अलौकिक उत्सव में मुख्य मंत्री का स्वागत है । इनका अपने सम्प्रदाय के साथ तथा परिवार के साथ निकट का परिचय है । मुख्यमंत्री बनने के पूर्व दो मास म्युजियम आये थे । मेरे साथ घंटे भर रहे तथा चाय पर चर्चा किये थे । आज हम सभी को ऐसे मुख्यमंत्री मिले है।

मैं तो दृढता के साथ मानता हूँ कि राजनीति में जब धर्म आता है तो राजनीती शोभायमान होती है । अपने लोक लाडिला प्रधानमंत्री आज यही कर रहे है । धर्म को आगे रखकर राजीनीति कर रहे है । ऐक बार मैं उनको बोला था । कि आपकी प्रशंसा विरोधी भी करते है । भले अंदर से ये भाव नही रखते हो । ब्रह्मानंद का एक कीर्तन है । सच्चा शूरवीर वही है, जिसकी चोट का वर्णन शत्रु करे । यही पंक्ति मैने मोदीजी को सुनाया था । जब राजनीति धर्म को साथ में रखकर ककरते है । तब राजनीति खिल जाती है । जब धर्म में राजनीति आती है तो अध:पतन हो जाता है । तो पुन: एकबार स्वागत के साथ श्रीजी महाराज के चरणो में प्रार्था है । जो स्वयं कई वर्षो से राज्य का नेतृत्व कर रहे है । गुजरात की प्रजा सुखी है । श्रीजी महाराज आप के परिवार को सुखी करे । इतना कहकर विराम दे रहा हूँ।

प.पू. बड़े महाराजश्री ता. ११-३-२०२६ : काफी समय बीत गया है । मुझे उत्सव के सारांश रुप में एक बात करना है । एक उदाहरण देगे । महाराजके समय की बात है । भुज में जगजीवन महेता जो सम्प्रदाय और महाराज के बैरी थे । वहाँ आर्मी के चीफ फतेह अहमद थे । जो बोले मेरा आप एक कार्य करेगे ? स्वामिनारायण को जेल में बंद कर दे । तब फतेह अहमदने जो कहा वह सुनने वाली बात है । मैं प्रतिदिन प्रात: घोडे पर सवार होकर नगर भ्रमण के लिये जाता हूँ । तब आप के स्वामिनारायण प्रात: काल हमीरसर होकर नगर भ्रमण के लिये जाता हूँ । तब आपके स्वामिनारायण प्रात: काल हमीसर में स्नान करने के लिये जाते है । तब उनकी हमारी नजर आपस में मिलती है । उस समय मुझे उनमें परमात्मा का दर्शन मिलता है । मैं तो इस सम्प्रदाय का नही हूँ । दूसरे धर्म वाला हूँ । फिर भी निश्चय है । आप तो उसी सम्प्रदाय के है । हिन्दू है । आप को ज्ञात नही है । यह बात हम सभी

को समझना चाहिए।

हम सभी को महाराजने अहमदाबाद और जेतलपुर दो पवित्र महान तीर्थ सौंपे है। कही बाहर खोजने नही जाना है। मैं प्रत्येक पूनम को वहाँ पर आता ही हूँ। उत्सव में आये सभी सत्संगीगण जो अहमदाबाद में रहते है। और नरनारायणदेव की पूनम में आते है। उन्हें नियम लेना चाहिए कि नरनारायणदेव का दर्शन करके जेतलपुर में दर्शन के लिये अवश्य आना चाहिए। तो इस उत्सव का अच्छाफल प्राप्त होगा। हमे जो प्राप्त है उसकी महिमा कईबार पता नही होता है। इस लिये दूसरी जगह पर खोजने जाते है।

अहमदाबाद के एक हरिभक्त थे। नरनारायणदेव की पाँचो आरती का दर्शनक रते तो भी खेरालु में बापू के यहाँ फूँक मरवाने गये थे। हमें जो मिला है। उसकी महिमा समझे। यह उत्सव की फलश्रुति है।

इस उत्सव को लालजी महाराजश्रीने सफल नेतृत्व किया है। संतो ने परिश्रम करके प्रबंध किये थे। जिस दाता ने आपना सहयोग दिया है। जिस किसान ने अपनी जमीन दी है। कितनो का नाम बताये ? सभी को धन्यवाद है। नरनारायणदेव की छत्रछाया से अनेक उत्सव होता रहे। ऐसी श्रीजी महाराज के चरणों प्रार्थना है।

प.पू. लालजी महाराजश्री ता. ११-३-२०२६ : सबसे पहले अनेक गाँवो से देश०विदेश से इतनी बड़ी संख्या में लगातार सात दिन से जो हरिभक्त उपस्थित रहे। जिन हरिभक्तो ने इस उत्सव में भाग लिये है। इस सभी को खूब धन्यवाद क्योकि हरिभक्तो द्वारा ही बड़ा उत्सव सम्भव है। दूर से आकर गर्मी मे बैठना इतना सम्भव नही है। तन, मन, धन से हरिभक्तोने सेवा दिया है। समय का योगदान दिये है। पिछले सात दिन से लाखो की संख्या में हरिभक्त उपस्थित हुए।

रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की महिमा जितना कहे उतना कम है। पूरे स्वामिनारायण सम्प्रदाय का कोई ऐसा हरिभक्त नही होगा जो वह कह दे मैने रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का पूनम भरा ही उसकी मनोकामना पूरी नही हुई हो। दूसरे जो इस सम्प्रदाय से जुडे नही है। वे भी इस ''अवसर'' मे जुडे है। जुडे है। उन्हे भी देव और मंदिर के प्रति प्रेम है। तभी आज इतना समुदाय एकत्र हुआ है।

विशेषकर संतो को आशीर्वाद देगे। क्योकि समैयो चल रहा था। तभी संत मिलकर उत्सव की अच्छी योजना बनाये थे। अहमदाबाद से काफी दूर हो जाने के कारण हम लोग प्रतिदिन आ नही सकते थे। लेकिन यहाँ के संतो ने अच्छी तरह से हरिभक्तो को छोटी बडी प्रत्येक सुविधा, सांख्ययोगी बहनो की और संतो की सुविधा अच्छे से दी गयी थी।

हम लोग किसके है। किसका बनकर रहना है। उसे हमेशा याद रखना है। नरनारायणदेव का होकर रहे। भगवानके द्वारा ही अपना वजूद है।

अवसर प्रारम्भ हुआ। इससे पहले स्वयं सेवको की मिटींग मे हमने कहा था। कि अपने ललाट पर तिलक हो, अवसर में स्वयं सेवक टी शर्ट पहने थे। आईकार्ड था। इस समय कोई व्यक्ति नही रहता है। अपनी संस्था के प्रतिनिधि के रुप में उस जगह पर खडे रहते है। इस समय अपना व्यवहार, बोलना, उठना, बैठना सब में विवेकपूर्ण व्यवहार कनरा चाहिए। सभी स्वयं सेवको ने अच्ची सेवा दी थी। फिर भी कुछ घटनाये ध्यान में आयी है। यहाँ पर हरिभक्त बैठे है। सभी लोग अपने परिवार के है। इस लिये विशेषकर कहना है कि अभी और ध्यान देना है। जह हम टीशर्ट पहने, आईकार्ड पहने हो तो अविवेकी व्यवहार नही करे। यह बात सभी के लिये है। हम सभी भगवान का प्रतिनिधित्व कर रहे





है। संस्था का प्रतिनिधित्व कर रहे है। सब कुछ देव का है। यह संस्था देव की है। इस विवेक को भूले नही।

अच्छे आनंद आया । पिछले सात-सात दिन से ''अवसर'' के समय पर कई उत्सव मनाये गये। देखते देखते तो उत्सव पूरे हो गये ? ''समैयो'' कब पूर्ण हो गया । आज ''अवसर'' की पूर्णाहुति होने जा रही है। अभी दूसरा निमंत्रण दे रहा हूँ। धोलका में ''त्योहार'' मीडिया टीम में निवेदन करता हूँ। ''त्योहार'' का लोगो स्क्रीन पर दिखाये । ६ स १० जनवरी २०२७ को आयोजित किया गया था। जिस प्रकार ''समैयो'' मनाया गया । और ''अवसर'' मनाया गया । इसी प्रकार धोलका की महिमा देश में दुनिया में गाँव में मुरली मनोहरदेव स्वामिनारायण भगवानने स्थापित किया है। इस देव की महिमा अनेक लोगो तक जाये। इसलिये ६ से १० जनवरी पाँच दिन का ''त्योहार'' धोलका मंदिर के सानिध्य में उल्लासपूर्वक मनाया जायेगा। ऐसा हमरा विशेष आग्रह है। ''अवसर'' की पूर्णाहुति करके दो दिन में जगह ही सर्वे करने हम और महाराजश्री जाने वाले है। जगह फिक्स करना है। यही के तथा विदेश से गये है। उन लोगो को अभी से ''त्योहार'' के लिये जोडना है।

आज के अवसर पर महाराज से प्रार्थना करे कि हम सभी भगवान के प्रति जुडे । रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की महिमा हमारे जीवन में प्रतिदिन बढती जाये। कृपा करे । सत्संग करने की शक्ति दे । ऐसी रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज और नरनारायणदेव के चरणों में आज के पवित्र दिन पर प्रार्थना है।

प.पू. महाराजश्री ता. ११-३-२०२६ : बलदेवजी दादा के चरणो में, उनके सानिध्य में देखरेख में इन की अमीदृष्टि में आज ''अवसर'' आया है। जो आप सभी को मिला है। कई बार बापजी नही बैठे रहते है। आज बापजी बैठे है। फिर दोहरा रहा हूँ। मनुष्य का स्वभाव होता है। चिंता करे, उद्वेग आये, खुश रहे, दुःखी रहे। यह सब होता है। लालजी महाराजश्री छोटी उम्र के थे। १७ वर्ष के थे। अभी याद है। कुछ हुआ होगा। बड़े बापजी के पास गये। शुरु से स्वभाव ऐसा ही था । पता नही बड़े बापजी को याद है या नही । असरावा छोडकर मेमनगर मे घर बना था। वहाँ पर रहने गये। ड्रेसिंग रुम में बापजी बैठे थे। सम्प्रदाय से जुडी बात थी। गुस्से में मैने बापजी से कहा। यह कैसे हो सकता है ? ऐसा नही वैसा है। खुब कहा था। बापजी तो अपने मस्ती मे रहते है। वैसे बापजी का स्वभाव ऐसा है कि बमफूट जाये। तो आप सम्भाल नही सकते है। जिसे पता है वह जानता है ।मैं तो एटमबम फोडू लेकिन वे तो डाईड्रोजन बम है। इनका पीछे हटना कठिन है। जिसे पता नही उन्हे पता चलना चाहिए। बहुत साल नही करना चाहिए। सत्संग बढता है। घटता है। यह भगवन के ईच्छा पर है। उस समय मैं दाँत घमाचकर कर दिया था। सही सुनना शेष रह गया था। अब मैं क्या करु ? इसके बाद जब से समझदार हुआ तब से कोई ब्लड प्रेशर नही बढा । और आज भी नही है । मैच्योरिटी तो धीरे धीरे आती है ? जन्मजात से कोई मैच्योर नही होता है। आप गोद में लेकर किसे धुमते हो कौन है ? यह १०-१२ वर्ष के पश्चात ज्ञान हुआ होगा। गलत लोगो का भार लेकर हम धुमते है। इस संसार में भगवान ही कर्ताहर्ता है। यह महाराज ने स्वयं कहा है। यह समझे मुझे २० से २५ वर्ष हुआ है। सत्य कह रहा हूं। सत्य कहने की शक्ति होनी चाहिए। यह कोई गलत बात नही है। हम देव की महिमा बताते है। लेकिन सत्य में देव की महिमा क्या है । यह समझते जीवन बीत जाता है । स्वामिनारायण भगवान क्या ? क्यो ? आज छोटा से छोटा हरिभक्त हो संत या आचार्य है। संक्षेप में भगवान के भक्त शब्द का प्रयोग करे। इनकी महिमा समझने में जीवन बीत जाता है। इस महिमा को प्रतिशत में समझते तो ०५ या ०.०५ था ०.०००५ बढते जाये। इसके लिये यह काम है। अपना पर्व पूर्ण हुआ। समैयो हुआ। अवसर आया और अब त्योहार आयेगा। दूसरा भी आयेगा। लालजी महाराजने कहा इसके बाद छपैया आयेगा। बडे स्तर पर जय जयकार करना है। महाराजने १०-१० धाम दिये है। अहमदाबाद देश में ६ धाम है। ६ठा छपैया तथा ७नाँ बड़े बापजी बैठे है। यह म्यूजियम है। यह सत्य है।

अभी बापजीने कहा हम लोग दूर-दूर शोध में जाते है।

हम तो खुलकर बोलते है । पर्यटन के लिये जाते है । यात्रा के लिये नही जाते है । भगवान की हृदय में खोजना चाहिए । मंदिर में जाकर अनुभूति करना चाहिए ।

पहले दिन भी कहे थे । लेकिन बड़े लोगो के कारण कम कहे थे । समय निकालकर आप सभी हरिभक्त आये है । टिकीट का भाडा देकर दान दिये है । यह किस प्रकार हो सकता है । यह महिमा आप ही जान सकते है । यह अद्‌भुत बात है । आज २०२६ में यह बात हो सकती है । आप तो केवल रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज को खुश करने के लिये कर रहे है । आप को प्रणाम करे दण्डवत करे यह कम है । यह प्रसंशा में नही कह रहा हूँ । लालजी महाराज और हम बैठे थे । बात कर रहे थे । भाई-बहन यहाँ पर कम छाया में बैठे है । यह सामान्य त्याग नही है । आप सभी हरिभक्तो को धन्यवाद है । महाराज की कितनी महिमा है । वास्तव में गुणबुद्धि रखने से दुनिया में सब कुछ सम्भव है । इससे बड़ा सतयुग इस दुनिया में नही है । क्योकि किनारा कही पर नही आता है ।

अभी स्वामीने कहा, आचार्य महाराजश्री की आज्ञा, आचार्यश्री की आज्ञा है ही नही.

ये पालयन्ति मनुजाः सच्छास्त्रप्रतिपादितान् ।
सदाचारन् सदा तेऽत्र परत्र च महासुखाः ॥

जो पालता है । वह इस लोक तथा परलोक में सुख भोगता है ।

इस शिक्षापत्री का पालन करेगा वह महासुखी होगा ।

तानुल्लङ्घ्यात्र वर्तन्ते ये तु स्वैरं कुबुद्धयः ।
त इहामुत्र च महाल्लभन्ते कष्टमेव हि ॥

आज्ञा का पालन नही करने वाले से हमारा कोई लेना-देना नही है । आज्ञा के अनादर से महाकष्ट प्राप्त करेगा । अपने मन से करने वाले को कुबुद्धिवाला भी कहे है । मेरी आज्ञा इसमें कहा से आयी ? भगवान द्वारा लिखी गयी शिक्षापत्री है । मुझे इसका पालन करना है। संतो तथा आप को रहना है । इससे दूर रहकर दुःखी ही रहेगा । इसमें रील और समाचार नही देखना है । यह सत्य है । महाराज जितने दयालु है । शेष चलाते भी नही है । उपर अक्षरधाम की चिंता नही करना है । सब कुछ हिसाब यही पर नरनारायणदेव कर देते है । मैने साक्षात् उदाहरण देखा है । बड़े बापजी के मुख से यह बात सुना है । उपर का हिसाब नही करते है । यह प्रत्यक्ष देव है । रेवती बलदेवजी प्रत्यक्षदेव है । इनका हिसाब उपर नही होता है । इनका हिसाब नीचे ही होता है । हमें स्वाभिमान है कि ऐसे देव के आश्रय में हम लोग रहते है । हम सभी अति भाग्यशाली है ।

धन्यवाद लोगोने अच्छा प्रबन्ध किया है । लालजी महाराजने कहा कि मैं तो बीजी था । संतो ने मिलकर किया है । प्रसंग के पूर्व ३ से ४ बार आया था । आज आत्म स्वामीने अच्छी बात कही है । कही पर कुछ छूट गया हो । यह बड़ा प्रसंग था ।

हमें यह ध्यान देना है कि किसी को जानबूझकर कष्ट नही देना है । लालजी के साथ आ रहे थे । एक सेवक थे । स्वयं सेवक भाई पर प्रेशर करते थे । एक दो बहने यहाँ पर वृद्ध थी । लगभग ७० से ७५ वर्ष की थी । वो बैठी थी लेकिन जिस तरह से उन्हें खड़ा किया । लालजी महाराज से मैने कहा मेरा तो रोवा खडा हो गया । वास्तव में वह सीन हम नही भूल सकते है । वह जो बहन है हमें माफ करे । वास्तव में अंदर

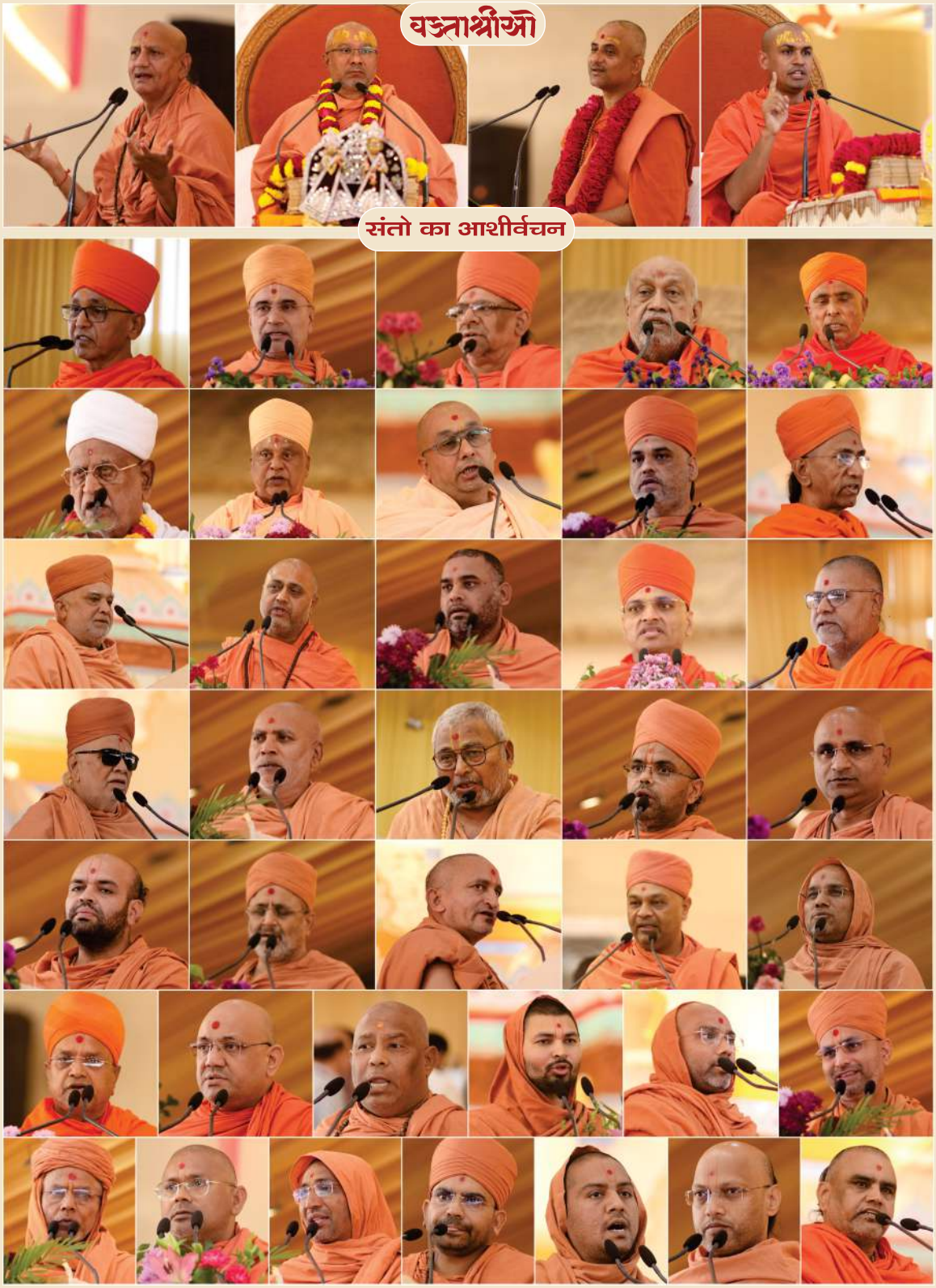


स्वयं सेवको की आवश्यकता ही नही है। हम सभी स्वयं सेवक है। प्रत्येक हरिभक्त को कैसे खडा रहना है। क्या करना है ? हरिभक्तो की कुछ सिखना आवश्यक नही है। मै कई बार कहता हूँ। केवल रसोई के अंदर या कुछ स्थानप र आवश्यकता होती है। हमारे पीछे-पीछे क्या करना है ? कोई बाउन्सर लेकर आयेगा तो मारेगा। हमें आता है क्या करना है ? वास्तव में जहाँ पर गलत होता है। वही पर हरिभक्तो की बेईज्जती होती है। आगे जाये। पीछे जाये यह नही करना चाहिए। आने वाले समय में इस विषय पर विशेष मीटींग करना है। Verified स्वयं सेवको को ही रखना है। क्योकि कई बार गडबडी हो जाती है। यह प्रसंग पूरा नही है। सामान्य बात कर रहा हूँ। कालुपुर मंदिर में बोले है। दूसरे मंदिरो में भी कहे है। गाँवो में भी कहे है। मुझे किसी से मिलना हो तो मिलने नही देते है। कई हरिभक्तो से हमने कहा है कि आप आते क्यो नही। तो बेल आने नही देते है। मैने कहा क्यो ? कौन ? लाये फोन करो। अब वास्तव में निश्चित हुआ। धोलका के अन्दर स्वयं सेवक ही नही। केवल सेवक ही रखना है। परेशान करे ऐसे स्वयं सेवको को नही रखना है। उनका स्पेशल प्रशिक्षण दिया जायेगा। लालजी महाराजश्री को करना है। हमारी आवश्कता पडे तो कहना। आयेगे। अवश्यकता पडने पर हमे बैठे है। आमंत्रण देना। क्योकि अध्यक्ष ये है। ''त्योहार'' के बाद इनकी जितनी जिम्मेदारी है। और गर्व है कि आज तीन पीढी हाजिर है।

यह तो बड़े बापू के अच्छा लगे। इसलिये नही कह रहा हूँ। जो कुछ इनसे मिला है वह अद्‌भुत है। एकबार को १० बार कहा हूँ। कुछ वस्तु निकलजाने के बाद अंदर ले लेना चाहिए। ताला लगा देना चाहिए। गोल्डन चेस्ट में रहे। अपने नाभि में रहे। मैने कहा है कि कर्ताधर्ता भगवान है। घटे-बढे... इसी प्रकार अम्मा अर्थात् मातुश्री बडी मातृश्री अम्मा है। उनके पास से बिजडम मिला है। कुछ वस्तु जाती नही है। कुछ वस्तु जो इस समय मिलती है। उसको प्राप्त करने की आवश्यकता है। केवल लेने की आवश्यकता है। यह सत्संग मिला है। समय को व्यर्थ नही करे। समय का योगदान बड़ा है। पैसा आज हें कल नही भी रहेगा। भाग दौड करके मानव मर जायेगा। अंत में चार नारियल लटकने वाला ही है। उठाने वाला कोई रहे तो अच्छा है। मै रहूँ या आप, सत्य यही है। जी रहे है बडी बात है। जी सकते है। इस पल को पाये बड़ी बात है। केवल रोने वाले क्या था। क्यो हो गया ?... हे हे हे मर गया। शेष कुछ नही। ऐसे को जाने दे। तुम जाओ !

इस सत्संग में जो सुख समृद्धि है। वह संसार में कही पर नही है। हम तो अनुभव से कर रहे है। हम सभी नरनारायणदेव की छत्रछाया के नीचे सम्भाल रहे है यह हमेशा रहेगा। जो देव मिले है। जो संत, हरिभक्त, भाईयो-बहनो जो यह माहोल मिला है। हम सभी को जो मिला है। इसका हम सभी को गर्व है। बलदेव दाता के प्रांगण में अति सुंदर उत्सव हुआ। दूर देश से आकर सभी ने योगदान किया। अभिनंदन, धन्यवाद। वही भी कम ही है।

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)


वक्ताश्रीओ
संतो का आशीर्वचन







अहमदाबाद मंदिर के प्रसादी चौक में फूलदोलोत्सव दर्शन









कालुपुर मंदिर में श्री रामनवमी और श्रीहरि का २४५ वाँ प्रगटोत्सव







श्री स्वामिनारायण म्यूजियम का १५ वाँ स्थापना दिवस पर ठाकुरजी का पूजन करते प.पू. बडे महाराजश्री और आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "जीवन में शुद्ध रहने का प्रयास करे"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम लोग बार-बार यहाँ क्यो एकत्र होते है ? भगवान का संस्मरण स्थायी रहे और भगवान की प्राप्ति हो । इस लिये यह साधना करते है । हम कुछ साधना करते है तो कुछ शर्त रहती है । उसका पालन करने पर साधना सिद्ध होती है । इस प्रकार हम सभी मिलकर भगवान की प्राप्ति के लिये साधना कहते है । इसके लिये सब से बडी शर्त है । अंतकरण शुद्ध होना चाहिए । अंतकरण शुद्द कैसे हो ? इसके लिये सबसे श्रेष्ठ उपाय है । कथा श्रवण और दूसरा सत शास्त्रो को पढना । सतशास्त्रो में भगवान का निवास रहता है । शास्त्र में जो भगवान की आज्ञा है । वह दो रुप में होती है । "विधि निषेध" शास्त्र पढकर उसे सिद्ध करने के लिये । दो मुख्य नियम का पालन करना चाहिए। शास्त्र में कुछ विधि दी गयी रहती है । उसे पढकर आदेशानुसार अनुसरण करना चाहिए। दूसरा क्या कार्य नही करना चाहिए। उसे 'निषेध' के रुप में समझाया गया है । वह हारे आध्यात्मिक विकास में रुकावट डालती है । जीवन मे क्या स्वीकार करे क्या त्याग करे । यह कथाश्रवण और अच्छे शास्त्र के पढने पर पता चलता है । आध्यात्मिक प्रगति मे सबसे बड़ा अवरोध क्या है ? "अहंकार" कुछ लोगो को लगता है कि मैं शुद्ध हूँ । मै जो कुछ कर रहा हूँ वह सब ठीक ही है । मुझसे कुछ गलत नही होता है । वास्तव में ऐसा नही है । भगवान की प्राप्ति के लिये तन, मन, धन की शुद्धि आवश्यक है । मन की शुद्धि कथा सुनने से होती है । शरीर की शुद्दि के लिये । नदी में स्नानक रना चाहिए। जीवन में पवित्रता होनी चाहिए । और तिसरा है । धन की शुद्धि धन की शुद्धि कैसे हो । 'दान' करे । सतकार्य करे । इससे धन शुद्ध होता है । लोभ का भी क्षय दान करने से होता है । तन, मन, धन की शुद्धि जीवनमें रहेगी । शास्त्रो का वाचन श्रवण रहेगा तो भगवान की साकार मूर्ति अपने मन में अंत:करण में प्रतिष्ठित रहे तथा भगवान के अलावा दूसरा कुछ महत्वपूर्ण नही है । ऐसा मन में भाव होना चाहिए । धीरे धीरे ऐसा समय आयेगा कि भगवान के अलावा कोई प्रिय नही लगेगा । बड़े-बड़े महात्मा थे । उनके पास ज्ञान था । क्यो कि वे लोग विधि निषिध सब कुछ पी गये थे । अर्थात् सब ज्ञान था । लेकिन अहंकार नही आ जाये । इस लिये क्या श्रवण के लिये तैयार रहते थे । शुकदेवने राजा परीक्षित को कथा क्यो सुनाये ? कल्याण के लिये । जब की परीक्षित परम भक्त थे । पूरा परिवार परम भक्त था । जिसे माता के गर्भ में भगवान का दर्शन हुआ था । ऐसे राजा परिष्ठित के कल्याण में क्या संदेह था । उनकी सद्गति तो निश्चित थी । फिर भी हम लोगो को सीखाने के लिये । ज्ञान देने के लिये भगवान शुकदेवजी और राजा परीक्षित को माध्यम बनाये । अपने जैसे संसारी को कथा सुनाये । अभी कलियुग चल रहा है । युग-युग का कार्य करता है । जो युग उसका शासन चलता है । हम सभी नरनारायणदेव के चरण में है । इस लिये कलियुग बुद्धि खराब नही कर पाता है । अपने जीवन में जो कुछ होता है । वह भगवान की मर्जी से होता है । इसके पीछे कुछ उद्देश्य रहता है । पूर्व के कर्म होते है । इस प्रकार प्रारब्ध तो भोगना ही पडता है । अचानक जीवन में कुछ घटना घटे वह निमित्त होता है । प्रारब्ध भोगने के लिये महाभारत का युद्ध हुआ । महाभारत युद्ध के बाद गांधारी ने श्रीकृष्ण भगवान से प्रश्न की आपतो अंतर्यामी है । यदि आप चाहते तो युद्ध नही होता । युद्ध में मेरे सौ पुत्र मारे भी नही जाते । तो आप ने ऐसा क्यो किया ? युद्ध क्यो होने दिये ? तो कृष्ण भगवानने गांधारी को उत्तर दिया कि आप हमे युद्ध का कारण मानती है । यह बात सत्य नही है । युद्ध का बीज तो बहुत पहले ही बो दिया गया था । जब हस्तिनापुर में धृतराष्ट्र और दुर्योधन के शासन में 'अधर्म' अन्याय अनीति सब कुछ चल रहा था । तभी से बीज बोना प्रारम्भ हो गया था । सबसे बड़ा अधर्म का कार्य तब हुआ । जब द्रोपदी का सभा में "चीरहरण" किया गया था । उसके अन्याय मे कोई कुछ नही कहा सभी लोग शांत होकर बैठे रहे । तब आप भी थी । आपने आँख पर पट्टी बाँध रखी थी । आप आँख से देख नही सकती थी । लेकिन मन और विवेक पर पट्टी नही थी । आप पुत्र मोह में आकर महिला के हो रहे अन्याय के विरोध नही की थी । अन्याय को शांत पूर्वक देखना भी मनुष्य को पाप का भागी बनाता है । उसे अधर्मी कहा जाता है । बीज बोना, पोषण देना, पल्लवित करना अर्थात् फल आने पर भोगना पडता है । बीज पडा था । इस कारण से फसल आयी । उसे काटने में हमने सहायता की है । सृष्टि में अधर्म का नाश करके धर्म की स्थापना करना मेरा कार्य है । अधर्म के नाश हेतु युद्ध करना अनिवार्य था । कोई भी सत्ता के मद में आकर अहंकार से अज्ञान होने पर क्या कर रहा है । वह स्वयं नही जान पाता है । लेकिन उसका फल भोगना पडता है ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

अभिषेक महापूजा

(मार्च-२०२६)

ता. ०१-०३-२०२६ प.भ.श्री रोहन भगवानभाई पटेल - सीतापुरवाले - वर्त. आस्ट्रेलिया - ह. भगवानभाई बलदेवभाई पटेल - राणीप।

ता. १४-०३-२०२६ प.भ.श्री कृणाल सुरेशभाई पटेल - करजीसणवाले - वर्त. आरती पटेल - केनेडा।

ता. १५-०३-२०२६ प.भ.श्री रश्मिबेन मनजीभाई हिराणी - यु.के.

ता. १५-०३-२०२६ (शायं) प.भ.श्री ध्रुवीन नटवरलाल पटेल (हिरावाडी) - यु.एस.ए.।

ता. २३-०३-२०२६ प.भ.श्री कमलभाई रोहितभाई पटेल - लेस्टर-यु.के.

१५वाँ स्थापना दिवस के मुख्य यजमानश्री

श्री स्वामिनारायण म्युजियम श्री नरनारायणदेव के अभिषेक के मुख्य यजमानश्री : धर्मकुल के कृपापात्र अ.नि.प.भ. हंसाबेन जयंतीलाल शाह के स्मरण में - ह. प.भ. मंथन राजीव शाह, अ.सौ. निराली मंथन शाह - फूल मंडली।

श्री धर्मकुल तथा संत पूजा के यजमानश्री : ● प.भ. डाह्याभाई नारणदास पटेल, श्रीमती विमलाबेन डाह्याभाी पटेल, श्री मेहुल डाह्याभाई पटेल, श्रीमती बिंदी मेहुल पटेल, श्री पूरव डाह्याभाई पटेल, श्रीमती स्तुति पूरव पटेल, चि. मिलाना, अमोरा (माणसावाले) ● प.भ. कमलेशभाई एच. शाह (लखतरिया-अहमदाबाद) ● प.भ.अ.नि. रसिकलाल अंबालाल पटेल, गं.सव्. कांताबेन रसिकलाल पटेल, प.भ. जयेशभाई रसिकलाल पटेल, प.भ. संजयभाी रसिकलाल पटेल समस्त परिवार (मोखासण वर्ते अमेरिका)



सूचना : श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एक मात्र व्यस्था श्री स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा / महाभिषेक कराने के लिये संपर्क करे।
म्युजियम मोबाईल दासभाई (बापुनगर) - ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.in ●
email: swaminarayanmuseum@gmail.com

युद्ध को मिटाने के लिये जो मैने छल कपट किया है। उसका फल मुझे भोगना पडेगा। खराब कर्मो का फल सभी को भोगना पडता है। मैं पांडवो के साथ इस लिये नही था कि वे हमारे मित्र थे। क्योकि पांडव धर्म के पक्ष में थे। धर्म के साथ मुझे रहना पडता है। जीवन में सुख आये तो खुश भी नही होना चाहिए। दुःख आये तो दुःखी भी नही होना चाहीए। सुख-दुःख अतिथि की तरह होते है। अपने घर अतिथि आते है तो क्या स्थायी रुप से रहते है ? कुछ समय रहते है पुनः चले जाते है। मेहमान दो प्रकार के होते है। प्रिय मेहमान तथा अप्रिय मेहमान। प्रिय मेहमान आने पर आग्रह करते है कि क्या जल्दी है। कृपया थोडा और रुके प्रिय मेहमान अच्छे लगते है। अप्रिय मेहमान आने पर लगता है कि यह कब जाये। वह निश्चित करके आया है। तो रुकने वाला ही है। जीवन में सुख-दुःख भी प्रिय-अप्रिय रुप में होते है। सुख प्रिय मेहमान के रुप में है। सुख आने पर रुके तो अच्छा लगता है। दुःख अप्रिय मेहमान की तरह होता है। कब जाये ऐसा लगता है। सुख-दुःख अपने प्रारब्ध के अनुसार आते-जाते है। ''समभाव'' रखकर दोनो अवस्था में रहना चाहिए। हम लोगो को ऐसे भगवान मिले है। जो स्त्री का रुप धारण करके अपने स्त्री भक्त के लिये आँख में दबा डाले है। पुरुष का सम्पर्क न हो उस का व्रत खंण्डित नही होने दिये थे। जोर जोर से रोये भी है। किस-किस प्रकार की लीला किये है। भगवान का निवास ''शुद्धता'' में होता है। मन को सब कुछ नही देना चाहिए। पानी को उपर ले जाने के लिये शक्ति लगानी पडती है। नीचे लाने के मेहनत नही करना पडता है। इस प्रकार जीवन में ऊँचाई पर जाना है तो कठोर श्रम करना पडता है। भगवान आप सभी को अधिक शक्ति दे। आप सभी जीवन में तन, मन, धन की शुद्धता रखकर उँचाई प्राप्त करे।

अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिक मास प्रथम ज्येष्ठ मास (पुरुषोत्तममास) की भव्य तैयारी से मनाना

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीजी महाराजने स्वयं अपने हाथो में लेकर प्रतिष्ठित श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में सं. २०८२ के पवित्र अधिक ज्येष्ठ मास (पुरुषोत्तम मास) में आने वाले पूरे मास के उत्सव विधि के प्रमाण से भव्यता से मनाने का आयोजन किया गया है। इस प्रसंग पर प्रतिदिनके वार्षिक व्रत-उत्सव के प्रसंगो के दर्शन का लाभ लेने हेतु हमारे सभी सत्संग समाज का प्रिय आमंत्रण है।

तिथि	तारीख	उत्सव	समय	रकम
जेठ सुद-१ रविवार	१७-५-२०२६	ग्वालबाल दर्शन	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-२ सोमवार	१८-५-२०२६	रथयात्रा	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-३ मंगलवार	१९-५-२०२६	श्री नरनारायणदेवनो पाटोत्सव	६-३० सवारे अभिषेक	-
जेठ सुद-४ बुधवार	२०-५-२०२६	गणेश पूजन	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-५ गुरुवार	२१-५-२०२६	शिक्षापत्री जयंती-वसंत पंचमी	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-६/७ शुक्रवार	२२-५-२०२६	शाकोत्सव दर्शन	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-८ शनिवार	२३-५-२०२६	राधाष्टमी	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-९ रविवार	२४-५-२०२६	बालस्वरूप श्रीघनश्याम महाराजनो	६-३० सवारे अभिषेक	५१०००/-
		पाटोत्सव, रामनवमी, श्रीहरि जयंति	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-१० सोमवार	२५-५-२०२६	दशेरा (पूजन)	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-११ मंगलवार	२६-५-२०२६	जळझीलणी, हाटडी	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-१२ बुधवार	२७-५-२०२६	रंगमहोल घनश्याम	६-३० सवारे अभिषेक	५१०००/-
		महाराजनो पाटोत्सव, वामन जयंती,	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-१३ गुरुवार	२८-५-२०२६	मनोरथ	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-१४ शुक्रवार	२९-५-२०२६	नृसिंह जयंती	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ सुद-१५ शनिवार	३०-५-२०२६	केशर स्नान	६-३० सवारे	-
जेठ वद-१ रवि	३१-५-२०२६	पुष्पदोलोत्सव नरनारायणदेव जयंती	८-०५ सवारे	२१०००/-
जेठ वद-२ सोमवार	१-६-२०२६	हिंडोळा सुकोमेवो	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-३ मंगलवार	२-६-२०२६	हिंडोळा आम्रकुंज	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-४ बुधवार	३-६-२०२६	हिंडोळा गीरी कंदरा	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-५ गुरुवार	४-६-२०२६	हिंडोळा सावन भादो	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-६ शुक्रवार	५-६-२०२६	हिंडोळा फ्रूट	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-७ शनिवार	६-६-२०२६	कुंजगली	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-८ रविवार	७-६-२०२६	जन्माष्टमी	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-९ सोमवार	८-६-२०२६	नंद महोत्सव	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-१० मंगलवार	९-६-२०२६	हिमालय दर्शन	८-०५ सवारे	२१०००/-
जेठ वद-११ बुधवार	१०-६-२०२६	हिमालय दर्शन	८-०५ सवार	२१०००/-
जेठ वद-१२ गुरुवार	११-६-२०२६	वनविचरण	८-०५ सवारे	२१०००/-
जेठ वद-१३ शुक्रवार	१२-६-२०२६	लक्ष्मीपूजन, धनतेरस	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-१४ शनिवार	१३-६-२०२६	श्री हनुमानजीनुं पूजन	८-०५ सवारे	११०००/-
जेठ वद-३० रविवार	१४-६-२०२६	अन्नकूट गोवर्धन पूजा	७-३० सवारे	११०००/-
		श्री नरनारायणदेव	९-०० सवारे	६१०००/-
		श्री राधाकृष्णदेव	९-०० सवारे	५१०००/-
		श्रीधर्मदेव भक्तिमाता हरिकृष्णमहाराज	९-०० सवारे	५१०००/-

प्रिय हरिभक्तो यह पवित्र अधिक पुरुषोत्तम मास प्रतितीन वर्ष के बाद आता है। इस कारण से इसमें यजमान बनने का सभी का मन होता है। इस लिये आप सभी समय से कोटार मे अपने यजमान पद हेतु नाम लिखवा दे। इसमें नाम-पता भी लिखवाये। तथा जिस उत्सव प्रसंग मे लाभ लेना चाहते है उसमं भी निश्चित रुप से नामांकन करवाले।

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१ ली. महंत स्वामी शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी

चंपकभाई : 80002 96429 ● हार्दिक : 77790 52048

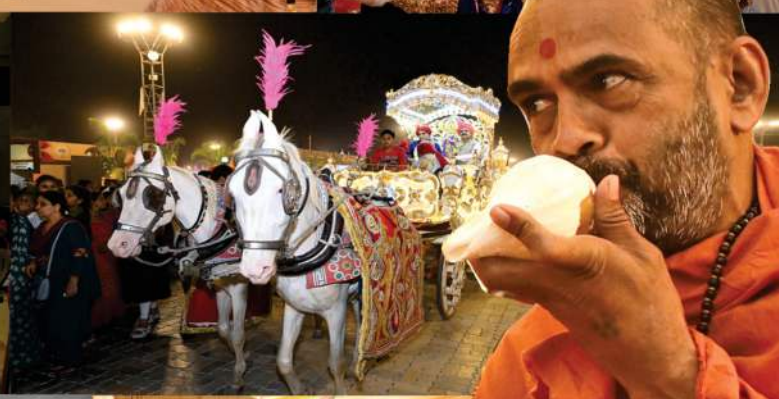
Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree SwaminarayanTemple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001.
Printed at **Asian Printery,** Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji











Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd Unaccountable L1 i/o. on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026



महामहिम राज्यपालश्री का सम्मान करते प.पू. लालजी महाराजश्री



मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल का सम्मान करते धर्मकुल



भा.ज.पा. प्रदेश प्रमुख जगदीशभाई पंचाल (विश्वकर्मा) का सम्मान करते प.पू. बड़े महाराजश्री



भूपेन्द्रसिंह चुडासमा और प्रदपसिंह जाडेजा का सम्मान



राजनीतिक महानुभावो का धर्मकुल द्वारा सम्मान